नहेमायाह

नहेमायाह की विनती

1 ये हकल्याह के पुत्र नहेमायाह के वचन हैं: मैं,
नहेमायाह, किसलवे नाम के महीने में शूशन नाम
की राजधानी नगरी में था। यह वह समय था जब
अर्तक्षत्र नाम के राजा के राज का बीसवाँ वर्ष* चल
रहा था। 2मैं जब अभी शूशन में ही था तो हनानी नाम
का मेरा एक भाई और कुछ अन्य लोग यहूदा से वहाँ
आये। मैंने उनसे वहाँ रह रहे यहूदियों के बारे में पूछा।
ये वे लोग थे जो बंधुआपन से बच निकले थे और अभी
तक यहूदा में रह रहे थे। मैंने उनसे यरूशलेम नगरी के
बारे में भी पूछा था।

3हनानी और उसके साथ के लोगों ने बताया, "हे
नहेमायाह, वे यहूदी जो बंधुआपन से बच निकले थे
और जो यहूदा में रह रहे हैं, गहन विपत्ति में पड़े हैं। उन
लोगों के सामने बहुत सी समस्याएँ हैं और वे बड़े
लज्जित हो रहे हैं। क्यों? क्योंकि यरूशलेम का
नगर-परकोटा ढह गया है और उसके प्रवेश द्वार आग
से जल कर राख हो गये हैं।"

4मैंने जब यरूशलेम के लोगों और नगर परकोटे के
बारे में वे बातें सुनीं तो मैं बहुत व्याकुल हो उठा। मैं बैठ
गया और चिल्ला उठा। मैं बहुत व्याकुल था। बहुत दिन
तक मैं स्वर्ग के परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए उपवास
करता रहा। 5इसके बाद मैंने यह प्रार्थना की:

हे यहोवा, हे स्वर्ग के परमेश्वर, तू महान है तथा तू
शक्तिशाली परमेश्वर है। तू ऐसा परमेश्वर है जो उन
लोगों के साथ अपने प्रेम की वाचा का पालन करता है
जो तुझसे प्रेम करते हैं और तेरे आदेशों पर चलते हैं।

6अपनी आँखे और अपने कान खोल। कृपा करके
तेरे सामने तेरा सेवक रात दिन जो प्रार्थना कर रहा है,
उस पर कान दे। मैं तेरे सेवक, इस्राएल के लोगों के
लिये विनती कर रहा हूँ। मैं उन पापों को स्वीकार
करता हूँ जिन्हें हम इस्राएल के लोगों ने तेरे विरूद्ध
किये हैं। मैंने तेरे विरुद्ध जो पाप किये हैं, उन्हें मैं
स्वीकार कर रहा हूँ तथा मेरे पिता के परिवार के दूसरे
लोगों ने तेरे विरुद्ध जो पाप किये हैं, मैं उन्हें भी स्वीकार
करता हूँ। 7हम इस्राएल के लोग तेरे लिये बहुत बुरे रहे
हैं। हमने तेरे उन आदेशों, अध्यादेशों तथा विधान का
पालन नहीं किया है जिन्हें तूने अपने सेवक मूसा को
दिया था।

8तूने अपने सेवक मूसा को जो शिक्षा दी थी, कृपा
करके उसे याद कर। तूने उससे कहा था, "यदि इस्राएल
के लोगों ने अपना विश्वास नहीं बनाये रखा तो मैं तुम्हें
तितर-बितर करके दूसरे देशों में फैला दूँगा। 9किन्तु
यदि इस्राएल के लोग मेरी ओर लौटे और मेरे आदेशों
पर चले तो मैं ऐसा करूँगा: मैं तुम्हारे उन लोगों को,
जिन्हें अपने घरों को छोड़कर धरती के दूसरे छोरों तक
भागने को विवश कर दिया गया था, वहाँ से मैं उन्हें
इकट्ठा करके उस स्थान पर वापस ले आऊँगा जिस
स्थान को अपनी प्रजा के लिये मैंने चुना है।"

10इस्राएल के लोग तेरे सेवक हैं और वे तेरे ही लोग
हैं। तू अपनी महाशक्ति का उपयोग करके उन लोगों
को बचा कर सुरक्षित स्थान पर ले आया है। 11इसलिए
हे यहोवा, कृपा करके अब मेरी विनती सुन। मैं तेरा
सेवक हूँ और कृपा करके अपने सेवकों की विनती
पर कान दे जो तेरे नाम को मान देना चाहते हैं। कृपा
करके आज मुझे सहारा दे। जब मैं राजा से सहायता
माँगू तब तू मेरी सहायता कर। मुझे सफल बना। मुझे
सहायता दे ताकि मैं राजा के लिए प्रसन्नतादायक बना
रहूँ। मैं राजा को दाखमधु सेवक हूँ।

राजा अर्तक्षत्र का नहेमायाह को यरूशलेम भेजना

2 राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष के नीसान नाम के
महीने* में राजा के लिये थोड़ी दाखमधु लाई गयी।
मैंने उस दाखमधु को लिया और राजा को दे दिया। मैं
जब पहले राजा के साथ था तो दु:खी नहीं हुआ था
किन्तु अब मैं उदास था। 2इस पर राजा ने मुझसे पूछा,
"क्या तू बीमार है? तू उदास क्यों दिखाई दे रहा है? मेरा
विचार है तेरा मन दु:ख से भरा है।"

इससे मैं बहुत अधिक डर गया। 3किन्तु यद्यपि मैं डर
गया था किन्तु फिर भी मैंने राजा से कहा, "राजा
जीवित रहें! मैं इसलिए उदास हूँ कि वह नगर जिसमें
मेरे पूर्वज दफनाये गये थे उजाड़ पड़ा है तथा उस नगर
के प्रवेश द्वार आग से भस्म हो गये हैं।"

किसलवे ... बीसवें वर्ष दिसंबर लगभग ई. पू. 444 वर्ष यह समय रहा होगा।

निसान के महिने अर्थात् मार्च-अप्रेल ईसापूर्व 443

4फिर राजा ने मुझसे कहा, “इसके लिये तू मुझसे
क्या करवाना चाहता है?”
इससे पहले कि मैं उत्तर देता, मैंने स्वर्ग के परमेश्वर
से विनती की। 5फिर मैंने राजा को उत्तर देते हुए कहा,
“यदि यह राजा को भाये और यदि मैं राजा के प्रति
सच्चा रहा हूँ तो यहूदा के नगर यरूशलेम में मुझे भेज
दिया जाये जहाँ मेरे पूर्वज दफ़नाये हुए हैं। मैं वहाँ जाकर
उस नगर को फिर से बसाना चाहता हूँ।”
6रानी राजा के बराबर बैठी हुई थी, सो राजा और
रानी ने मुझसे पुछा, “तेरी इस यात्रा में कितने दिन
लगेंगे? यहाँ तू कब तक लौट आयेगा?”
राजा मुझे भेजने के लिए राजी हो गया। सो मैंने उसे
एक निश्चित समय दे दिया। 7मैंने राजा से यह भी कहा,
“यदि राजा को मेरे लिए कुछ करने में प्रसन्नता हो तो
मुझे यह माँगने की अनुमति दी जाये। कृपा करके
परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों को दिखाने
के लिये कुछ पत्र दिये जायें। ये पत्र मुझे इसलिए चाहिए
ताकि वे राज्यपाल यहूदा जाते हुए मुझे अपने-अपने
इलाकों से सुरक्षापूर्वक निकलने दें। 8मुझे द्वारों, दीवारों,
मन्दिरों के चारों ओर के प्राचीरों और अपने घर के
लिये लकड़ी की भी आवश्यकता है। इसलिए मुझे आपसे
आसाप के नाम भी एक पत्र चाहिए. आसाप आपके
जंगलात का हाकिम है।”
सो राजा ने मुझे पत्र और वह हर वस्तु दे दी जो मैंने
मांगी थी। क्योंकि परमेश्वर मेरे प्रति दयालु था इसलिए
राजा ने यह सब कर दिया था।
9इस तरह मैं परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों
के पास गया और उन्हें राजा के द्वारा दिये गये पत्र
दिखाये। राजा ने सेना के अधिकारी और घुड़सवार
सैनिक भी मेरे साथ कर दिये थे। 10सम्बल्लत और
तोबियाह नाम के दो व्यक्तियों ने मेरे कामों के बारे में
सुना। वे यह सुनकर बहुत बेचैन और क्रोधित हुए कि
कोई इस्राएल के लोगों की मदद के लिये आया है।
सम्बल्लत होरोन का निवासी था और तोबियाह अम्मोनी
का अधिकारी था।

नहेमायाह द्वारा यरूशलेम के परकोटे का निरीक्षण

11-12मैं यरूशलेम जा पहुँचा और वहाँ तीन दिन तक
ठहरा और फिर कुछ लोगों को साथ लेकर मैं रात को
बाहर निकल पड़ा। परमेश्वर ने यरूशलेम के लिये
कुछ करने की जो बात मेरे मन में बसा दी थी उसके
बारे में मैंने किसी को कुछ भी नहीं बताया था। उस
घोड़े के सिवा, जिस पर मैं सवार था, मेरे साथ और
कोई घोड़े नहीं थे। 13अभी जब अंधेरा ही था तो मैं
तराई द्वार से होकर गुज़रा। अजगर के कुएँ की तरफ़
मैंने अपना घोड़ा मोड़ दिया तथा मैं उस द्वार पर भी घोड़े
को ले गया, जो कूड़ा फाटक की ओर खुलता था। मैं
यरूशलेम के उस परकोटे का निरीक्षण कर रहा था
जो टूटकर ढह चुका था। मैं उन द्वारों को भी देख रहा
था जो जल कर राख हो चुके थे। 14इसके बाद मैं सोते
के फाटक की ओर अपने घोड़े को ले गया और फिर
राजसरोवर के पास जा निकला। किन्तु जब मैं निकट
पहुँचा तो मैंने देखा कि वहाँ मेरे घोड़े के निकलने के
लिए पर्याप्त स्थान नहीं है। 15इसलिए अन्धेरे में ही मैं
परकोटे का निरीक्षण करते हुए घाटी की ओर ऊपर
निकल गया और अन्त में मैं लौट पड़ा और तराई के
फाटक से होता हुआ भीतर आ गया। 16उन अधिकारियों
और इस्राएल के महत्त्वपूर्ण लोगों को यह पता नहीं चला
कि मैं कहाँ गया था। वे यह नहीं जान पाये कि मैं क्या
कर रहा था। मैंने यहूदियों, याजकों, राजा के परिवार,
हाकिमों अथवा जिन लोगों को वहाँ काम करना था,
अभी कुछ भी नहीं बताया था।
17इसके बाद मैंने उन सभी लोगों से कहा, “यहाँ हम
जिन विपत्तियों में पड़े हैं, तुम उन्हें देख सकते हो।
यरूशलेम खण्डहरों का ढेर बना हुआ है तथा इसके
द्वार आग से जल चुके हैं। आओ, हम यरूशलेम के
परकोटे का फिर से निर्माण करें। इससे हमें भविष्य में
फिर कभी लज्जित नहीं रहना पड़ेगा।”
18मैंने उन लोगों को यह भी कहा कि मुझ पर
परमेश्वर की कृपा है। राजा ने मुझसे जो कुछ कहा
था, उन्हें मैंने वे बातें भी बतायी। इस पर उन लोगों ने
उत्तर देते हुए कहा, “आओ, अब हम काम करना शुरु
करें!” सो उन्होंने उस उत्तम कार्य को करना आरम्भ
कर दिया। 19किन्तु होरोन के सम्बल्लत अम्मोनी के
अधिकारी तोबियाह और अरब के गेशेम ने जब यह
सुना कि फिर से निर्माण कर रहे हैं तो उन्होंने बहुत
भद्दे ढंग से हमारा मजाक उड़ाया और हमारा अपमान
किया। वे बोले, “यह तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम
राजा के विरोध में हो रहेहो?”
20किन्तु मैंने तो उन लोगों से बस इतना ही कहा:
“हमें सफल होने में स्वर्ग का परमेश्वर हमारी सहायता
करेगा। हम परमेश्वर के सेवक हैं और हम इस नगर
का फिर से निर्माण करेंगे। इस काम में तुम हमारी
मदद नहीं कर सकते। यहाँ यरूशलेम में तुम्हारा कोई
भी पूर्वज पहले कभी भी नहीं रहा। इस धरती का कोई
भी भाग तुम्हारा नहीं है। इस स्थान में बने रहने का
तुम्हें कोई अधिकार नहीं है!”

परकोटा बनाने वाले

3 वहाँ के महायाजक का नाम था एल्याशीब। एल्याशीब
और उसके साथी (याजक) निर्माण का काम करने
के लिये गये और उन्होंने भेड़ द्वार का निर्माण किया।
उन्होंने प्रार्थनाएँ की और यहोवा के लिये उस द्वार को
पवित्र बनाया। उन्होंने द्वार के दरवाजों को दीवार में

लगाया। उन याजकों ने यरूशलेम के परकोटे पर काम करते हुए हम्मेआ के गुम्बद तथा हननेल के गुम्बद तक उसका निर्माण किया। उन्होंने प्रार्थनाएँ कीं और यहोवा के लिये अपने कार्य को पवित्र बनाया।

2याजकों के द्वारा बनाएँ गए परकोटे से आगे के परकोटे को यरीहों केलोगों ने बनाया और फिर यरीहो के लोगों द्वारा बनाये गये परकोटे के आगे के परकोटे का निर्माण इम्री के पुत्र जक्कूर ने किया।

3फिर हस्सना के पुत्रों ने मछली दरवाजे का निर्माण किया। उन्होंने वहाँ यथास्थान कड़ियाँ बैठायीं। उस भवन में उन्होंने दरवाजे लगाये और फिर दरवाजों पर ताले लगाये और मेखें जड़ीं।

4उरियाह के पुत्र मरेमोत ने परकोटे के आगे के भाग की मरम्मत की (उरियाह हक्कोस का पुत्र था)।

मशूल्लाम, जो बरेक्याह का पुत्र था, उसने परकोटे के उससे आगे के भाग की मरम्मत की। (बरेक्याह मशेजबेल का पुत्र था)।

बाना के पुत्र सादोक ने इससे आगे की दीवार को मज़बूत किया।

5दीवार के आगे का भाग तकोई लोगों द्वारा सुदृढ़ किया गया किन्तु तकोई के मुखियाओं ने अपने स्वामी नहेमायाह की देख रेख में काम करने से मना कर दिया।

6पुराने दरवाज़े की मरम्मत का काम योयादा और मशूल्लाम ने किया। योयादा पासेह का पुत्र था और मशूल्लाम बसोदयाह का पुत्र था। उन्होंने कड़ियों को यथास्थान बैठाया। उन्होंने कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाई और फिर दरवाज़े पर ताले लगाये तथा मेखें जड़ीं।

7इसके आगे के परकोटे की दीवार की मरम्मत गिबोनी लोगों और मिस्पा के रहने वालों ने बनाई। गिबोन की ओर से मलत्याह और मेरोनोती की ओर से यादोन ने काम किया। गिबोन और मेरोनोती वे प्रदेश है जिनका शासन इफ्रात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों द्वारा किया जाता था।

8परकोटे की दीवार के अगले भाग की मरम्मत हर्हयाह के पुत्र उजीएल ने की। उजीएल सुनार हुआ करता था। हनन्याह सुगन्ध बनाने का काम करता था। इन लोगों ने यरूशलेम के परकोटे की चौड़ी दीवार तक मरम्मत करके उसका निर्माण किया।

9इससे आगे की दीवार की मरम्मत हूर के पुत्र रपायाह ने की। रपायाह आधे यरूशलेम का प्रशासक था।

10परकोटे की दीवार का दूसरा हिस्सा हरुपम के पुत्र यदायाह ने बनाया। यदायाह ने अपने घर के ठीक बाद की दीवार की मरम्मत की। इसके बाद के हिस्से की मरम्मत का काम हशब्नयाह के पुत्र हत्तूश ने किया।
11हारीम के पुत्र मल्कियाह तथा पहत्मोआब के पुत्र हश्शूब ने परकोटे के अगले एक दूसरे हिस्से की मरम्मत की। इन ही लोगों ने भट्टों की मीनार की मरम्मत भी की।

12शल्लूम जो हल्लोहेश का पुत्र था, उसने परकोटे की दीवार के अगले हिस्से को बनाया। इस काम में उसकी पुत्रियों ने भी उसकी मदद की। शल्लूम यरूशलेम के दूसरे आधे हिस्से का राज्यपाल था।

13हानून नाम के एक व्यक्ति तथा जानोह नगर के निवासियों ने तराई फाटक की मरम्मत की। उन ही लोगों ने तराई फाटक का निर्माण किया। उन्होंने कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाई और फिर दरवाजों पर ताले लगाये तथा मेखें जड़ीं। उन्होंने पाँच सौ गज लम्बी परकोटे की दीवार की मरम्मत की। उन्होंने कुरड़ी–दरवाजे तक इस दीवार का निर्माण किया।

14रेकाब के पुत्र मल्कियाह ने कुरड़ी–दरवाज़े की मरम्मत की। मल्कियाह बेथक्केरेम ज़िले का हाकिम था। उसने दरवाजों की मरम्मत की, कब्जों पर जोड़ियाँ चड़ाई और फिर दरवाज़ों पर ताले लगवा कर मेखें जड़ीं।

15कोल्होज़े के पुत्र शल्लूम ने स्रोत द्वार की मरम्मत की। शल्लूम मिस्पा कस्बे का राज्यपाल था उसने उस दरवाजें को लगवाया और उसके ऊपर एक छत डलवाई। कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाई और फिर दरवाज़ों पर ताले लगवाकर मेखें जड़ीं। शल्लूम ने शेलह के तालाब की दीवार की मरम्मत भी करवाई। यह तालाब राजा के बगीचे के पास ही था। दाऊद की नगरी को उतरने वाली सीढ़ियों तक समूची दीवार की भी उसने मरम्मत करवाई।

16अजबूक के पुत्र नहेमायाह ने अगले हिस्से की मरम्मत करवाई। यह नहेमायाह बेतसूर नाम के ज़िले के आधे हिस्से का राज्यपाल था। उसने उस स्थान तक भी मरम्मत करवाई जो दाऊद के कब्रिस्तान के सामने पड़ता था। आदमियों के बनाये हुए तालाब तक, तथा वीरों के निवास नामक स्थान तक भी उसने मरम्मत का यह कार्य करवाया।

17लेवीवंश परिवार सूह के लोगों ने परकोटे के अगले हिस्से की मरम्मत की। लेवीवंश के इन लोगों ने बानी के पुत्र रहूम की देखरेख में काम किया। अगले हिस्से की मरम्मत हशब्याह ने की। हशब्याह कीला नाम कस्बे के आधे भाग का प्रशासक था। उसने अपने ज़िले की ओर से मरम्मत का यह काम करवाया।

18अगले हिस्से की मरम्मत उन के भाइयों ने की। उन्होंने हेनादाद के पुत्र बव्वै की अधीनता में काम किया। बव्वै कीला कस्बे के आधे हिस्से का प्रशासक था।

19इससे अगले हिस्से की मरम्मत का काम येशु के पुत्र एज़ेर ने किया। एज़ेर मिस्पा का राज्यपाल था।

उसने शस्त्रागार से लेकर परकोटे की दीवार के कोने
तक मरम्मत का काम किया। 20इसके बाद बारुक के
पुत्र जब्बै ने उससे अगले हिस्से की मरम्मत की। उसने
उस कोने से लेकर एल्याशीब के घर के द्वार तक
दीवार के इस हिस्से की बड़ी मेहनत से मरम्मत की।
एल्याशीब महायाजक था। 21उरियाह के पुत्र मरेमोत ने
एल्याशीब के घर के दरवाज़े से लेकर उसके घर के
अंत तक परकोटे के अगले हिस्से की मरम्मत की।
उरियाह, हक्कोस का पुत्र था। 22इसके बाद की दीवार
के हिस्से की मरम्मत का काम उन याजकों द्वारा
किया गया जो उस इलाके में रहते थे।

23फिर बिन्यामीन और हश्शूब ने अपने घरों के
आगे के नगर परकोटे के हिस्सों की मरम्मत की।
उसके घर के बाद की दीवार अनन्याह के पोते और
मासेयाह के पुत्र अजर्याह ने बनवाई।

24फिर हेनादाद के पुत्र बिन्नूई ने अजर्याह के घर से
लेकर दीवार के मोड़ और फिर कोने तक के हिस्से
की मरम्मत की।

25इसके बाद ऊजै के पुत्र पालाल ने परकोटे के उस
मोड़ से लेकर बुर्ज तक की दीवार की मरम्मत के लिये
काम किया। यह मीनार राजा के ऊपरी भवन पर थी।
यह राजा के पहरेदारों के आँगन के पास ही था।
पालाल के बाद परोश के पुत्र पदायाह ने इस काम को
अपने हाथों में लिया।

26मन्दिर के जो सेवक ओपेल पहाड़ी पर रहा करते
थे उन्होंने परकोटे के अगले हिस्से की जल-द्वार के
पूर्वी ओर तथा उसके निकट के गुम्बद तक की मरम्मत
का काम किया।

27विशाल गुम्बद से लेकर ओपेल की पहाड़ी से लगी
दीवार तक के समूचे भाग की मरम्मत का काम तकोई
के लोगों ने पूरा किया।

28अश्व-द्वार के ऊपरी हिस्से की मरम्मत का काम
याजकों ने किया। हर याजक ने अपने घर के आगे की
दीवार की मरम्मत की। 29इम्मेर के पुत्र सादोक ने
अपने घर के सामने के हिस्से की मरम्मत की। फिर
उससे अगले हिस्से की मरम्मत का काम शकन्याह के
पुत्र समयाह ने पूरा किया समयाह पूर्वी फाटक का
द्वारपाल था।

30दीवार के बचे हुए हिस्से की मरम्मत का काम
शेलेम्याह के पुत्र हनन्याह और सालाप के पुत्र हानून ने
पूरा किया (हानून सालाप का छठाँ पुत्र था)

बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम ने अपने घर के आगे की
दीवार की मरम्मत की। 31फिर मल्कियाह ने मन्दिर
के सेवकों के घरों और व्यापारियों के घरों तक की
दीवार की मरम्मत की। यानी निरीक्षण द्वार के सामने
से दीवार के कोने के ऊपरी कक्ष तक के हिस्से की
मरम्मत मल्कियाह ने की। 32मल्कियाह एक सुनार
हुआ करता था। कोने के ऊपरी कमरे से लेकर
भेड़-द्वार तक की बीच की दीवार का समूचा हिस्सा
सुनारों और व्यापारियों ने ठीक किया।

सम्बल्लत और तोबियाह

4 जब सम्बल्लत ने सुना कि हम लोग यरूशलेम के
नगर परकोटे का पुन: निर्माण कर रहे हैं, तो वह
बहुत क्रोधित और व्याकुल हो उठा। वह यहूदियों की
हँसी उड़ाने लगा। 2सम्बल्लत ने अपने मित्रों और सेना
से शोमरोन में इस विषय को लेकर बातचीत की। उसने
कहा, "ये शक्तिहीन यहूदी क्या कर रहे हैं? उनका
विचार क्या है? क्या वे अपनी बलियाँ चढ़ा पायेंगे?
शायद वे ऐसा सोचते हैं कि वे एक दिन में ही इस
निर्माण कार्य को पूरा कर लेंगे। धूल मिट्टी के इस ढेर
में से वे पत्थरों को उठा कर फिर से नया जीवन नहीं दे
पायेंगे। ये तो अब राख और मिट्टी के ढेर बन चुके
हैं!"

3 अम्मोन का निवासी तोबियाह सम्बल्लत के साथ
था। तोबियाह बोला, "ये यहूदी जो निर्माण कर रहे
उसके बारे में ये क्या सोचते हैं? यदि कोई छोटी सी
लोमड़ी भी उस दीवार पर चढ़ जाये तो उनकी वह
पत्थरों की दीवार ढह जायेगी!"

4तब नहेमायाह ने परमेश्वर से प्रार्थना की और वह
बोला, "हे हमारे परमेश्वर, हमारी विनती सुन। वे लोग
हमसे घृणा करते हैं। सम्बल्लत और तोबियाह हमारा
अपमान कर रहे हैं। इन बुरी बातों को तू उन ही के
साथ घटा दे। उन्हें उन व्यक्तियों के समान लज्जित कर
जिन्हें बन्दी के रूप में ले जाया जा रहा हो। 5उनके उस
अपराध को दूर मत कर अथवा उनके उन पापों को
क्षमा मत कर जिन्हें उन्होंने तेरे देखते किया है। उन्होंने
परकोटे को बनाने वालों का अपमान किया है तथा
उनकी हिम्मत तोड़ी है।"

6हमने यरूशलेम के परकोटे का पुन: निर्माण किया
है। हमने नगर के चारों ओर दीवार बनाई है। किन्तु
उसे जितनी ऊँची होनी चाहिये थी, वह उससे आधी ही
रह गयी है। हम यह इसलिए कर पाये कि हमारे लोगों
ने अपने समूचे मन से इस कार्य को किया।

7किन्तु सम्बल्लत, तोबियाह, अरब के लोगों, अम्मोन
के निवासियों और अशदोद के रहने वाले लोगों को
उस समय बहुत क्रोध आया। जब उन्होंने यह सुना कि
यरूशलेम के परकोटे पर लोग निरन्तर काम कर रहे
हैं। उन्होंने सुना था कि लोग उस दीवार की दरारों को
भर रहे हैं। 8सो वे सभी लोग आपस में एकत्र हुए और
उन्होंने यरूशलेम के विरुद्ध योजनाएँ बनाई। उन्होंने
यरूशलेम के विरुद्ध गड़बड़ी पैदा करने का षड़यन्त्र
रचा। उन्होंने यह योजना भी बनाई कि नगर के ऊपर
चढ़ाई करके युद्ध किया जाये। 9किन्तु हमने अपने

परमेश्वर से विनती की और नगर परकोटे की दीवारों
पर हमने पहरेदार बैठा दिये ताकि वे वहाँ दिन-रात
रखवाली करें जिससे हम उन लोगों का मुकाबला करने
के लिए तुरन्त तैयार रहें।

10उधर उसी समय यहूदा के लोगों ने कहा, "कारीगर
लोग थकते जा रहे हैं। वहाँ बहुत सी धूल-मिट्टी और
कूड़ा करकट पड़ा है। सो हम अब परकोटे पर निर्माण
कार्य करते नहीं रह सकते **11**और हमारे शत्रु कह रहे
हैं, 'इससे पहले कि यहूदियों को इसका पता चले अथवा
वे हमें देख लें, हम ठीक उनके बीच पहुँच जायेंगे। हम
उन्हें मार डालेगें जिससे उनका काम रुक जायेगा।'"

12इसके बाद हमारे शत्रुओं के बीच रह रहे यहूदी
हमारे पास आये और उन्होंने हमसे दस बार यह कहा,
"हमारे चारों तरफ़ हमारे शत्रु हैं, हम जिधर भी मुड़ें,
हर कहीं हमारे शत्रु फैले हैं।"

13सो मैंने परकोटे की दीवार के साथ-साथ जो स्थान
सबसे नीचे पड़ते थे, उनके पीछे कुछ लोगों को नियुक्त
कर दिया तथा मैंने दीवार में जो नाके पड़ते थे, उन पर
भी लोगों को लगा दिये। मैंने समूची दीवारों को उनकी
तलवारों, भालों और धनुष बाणों के साथ वहाँ लगा
दिया। **14**मैंने सारी स्थिति का जायजा लिया और फिर
खड़े होकर महत्त्वपूर्ण परिवारों, हाकिमों तथा दूसरे
लोगों से कहा, "हमारे शत्रुओं से डरो मत। हमारे स्वामी
को याद रखो। यहोवा महान है और शक्तिशाली है!
तुम्हें अपने भाइयों, अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों के
लिए यह लड़ाई लड़नी ही है! तुम्हें अपनी पत्नियों और
अपने घरों के लिए युद्ध करना ही होगा!"

15इसके बाद हमारे शत्रुओं के कान में यह भनक
पड़ गयी कि हमें उनकी योजनाओं का पता चल चुका
है। वे जान गये कि परमेश्वर ने उनकी योजनाओं पर
पानी फेर दिया। इसलिए हम सभी नगर परकोटे की
दीवार पर काम करने को वापस लौट गये। प्रत्येक
व्यक्ति फिर अपने स्थान पर वापस चला गया और
अपने हिस्से का काम करने लगा। **16**उस दिन के बाद
से मेरे आधे लोग परकोटे पर काम करने लगे और
मेरे आधे लोग भालों, ढालों, तीरों और कवचों से सुसज्जित
होकर पहरा देते रहे। यहूदा के उन लोगों के पीछे जो
नगर परकोटे की दीवार का निर्माण कर रहे थे, सेना
के अधिकारी खड़े रहते थे। **17**सामान ढोनेवाले मजदूर
एक हाथ से काम करते तो उनके दूसरे हाथ में हथियार
रखते थे। **18**हर कारीगर की बगल में, जब वह काम
करता हुआ होता, तलवार बंधी रहती थी। लोगों को
सावधान करने के लिये बिगुल बजाने वाला व्यक्ति मेरे
पास ही रहता। **19**फिर प्रमुख परिवारों, हाकिमों और
शेष दूसरे लोगों को सम्बोधित करते हुए मैंने कहा,
"यह बहुत बड़ा काम है। हम परकोटे के सहारे-सहारे
फैले हुए हैं। हम एक दूसरे से दूर पड़ गये हैं। **20**सो यदि
तुम बिगुल की आवाज़ सुनो, तो उस निर्धारित स्थान
पर भाग आना। वहीं हम सब इकट्ठे होंगे और हमारे
लिये परमेश्वर युद्ध करेगा!"

21इस प्रकार हम यरूशलेम की उस दीवार पर काम
करते रहे और हमारे आधे लोगों ने भाले थामे रखे।
हम सुबह की पहली किरण से लेकर रात में तारे
छिटकने तक काम किया करते थे।

22उस अवसर पर लोगों से मैंने यह भी कहा था:
"रात के समय हर व्यक्ति और उसका सेवक यरूशलेम
के भीतर ही ठहरे ताकि रात के समय में वे पहरेदार
रहें और दिन के समय कारीगर।" **23**इस प्रकार हममें
से कोई भी कभी अपने कपड़े नहीं उतारता था न मैं,
न मेरे साथी, न मेरे लोग और न पहरेदार! हर समय
हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने दाहिने हाथ में हथियार
तैयार रखा करताथा।

नहेमायाह द्वारा गरीबों की सहायता

5 बहुत से गरीब लोग अपने यहूदी भाइयों के विरुद्ध
शिकायत करने लगे थे। **2**उनमें से कुछ कहा
करते थे, "हमारे बहुत से बच्चे हैं। यदि हमें खाना खाना
है और जीवित रहना है तो हमें थोड़ा अनाज तो मिलना
ही चाहिए!"

3दूसरे लोगों का कहना है, "इस समय अकाल पड़
रहा है। हमें अपने खेत और घर गिरवी रखने पड़ रहे हैं
ताकि हमें थोड़ा अनाज मिल सके।"

4कुछ लोग यह भी कह रहे थे, "हमें अपने खेतों
और अँगूर के बगीचों पर राजा का कर चुकाना पड़ता
है किन्तु हम कर चुका नहीं पाते हैं इसलिए हमें कर
चुकाने के वास्ते धन उधार लेना पड़ता है। **5**उन धनवान
लोगों की तरफ़ देखो! हम भी वैसे ही अच्छे हैं जैसे वे
हमारे पुत्र भी वैसे ही अच्छे हैं, जैसे उनके पुत्र। किन्तु
हमें अपने पुत्र-पुत्री दासों के रूप में बेचने पड़ रहे हैं।
हममें से कुछ को तो दासों के रूप में अपनी पुत्रियों को
बेचना भी पड़ा है! ऐसा कुछ भी तो नहीं है जिसे हम
कर सकें! हम अपने खेतों और अँगूर के बगीचों को
खो चुके हैं! अब दूसरे लोग उनके मालिक हैं!"

6जब मैंने उनकी ये शिकायतें सुनीं तो मुझे बहुत
क्रोध आया। **7**मैंने स्वयं को शांत किया और फिर धनी
परिवारों और हाकिमों के पास जा पहुँचा। मैंने उनसे
कहा, "तुम अपने ही लोगों को उस धन पर ब्याज
चुकाने के लिये विवश कर रहे हो जिसे तुम उन्हें
उधार देते हो! निश्चय ही तुम्हें ऐसा बन्द कर देना
चाहिए!" फिर मैंने लोगों की एक सभा बुलाई

8और फिर मैंने उन लोगों से कहा, "दूसरे देशों में
हमारे यहूदी भाइयों को दासों के रूप में बेचा जाता था।
उन्हें वापस खरीदने और स्वतन्त्र कराने के लिए हमसे
जो बन पड़ा, हमने किया और अब तुम उन्हें फिर दासों

के रूप में बेच रहे हो और हमें फिर उन्हें वापस लेना पड़ेगा!"

इस प्रकार वे धनी लोग और वे हाकिम चुप्पी साधे रहे। कहने को उनके पास कुछ नहीं था।
9सो मैं बोलता चला गया। मैंने कहा, "तुम लोग जो कुछ कर रहे हो, वह उचित नहीं है! तुम यह जानते हो कि तुम्हें परमेश्वर से डरना चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए। तुम्हें ऐसे लज्जापूर्ण कार्य नहीं करने चाहिए जैसे दूसरे लोग करते हैं!
10मेरे लोग, मेरे भाई और स्वयं मैं भी लोगों को धन और अनाज़ उधार पर देते हैं। किन्तु आओ हम उन कर्जों पर ब्याज चुकाने के लिये उन्हें विवश करना बन्द कर दें!
11इसी समय तुम्हें उन के खेत, अँगूर के बगीचें, जैतून के बाग और उनके घर उन्हें वापस लौटा देने चाहिए और वह ब्याज भी तुम्हें उन्हें लौटा देना चाहिए जो तुमने उनसे वसूल किया है। तुमने उधार पर उन्हें जो धन, जो अनाज़, जो नया दाखमधु और जो तेल दिया है, उस पर एक प्रतिशत ब्याज वसूल किया है!
12इस पर धनी लोगों और हाकिमों ने कहा, "हम यह उन्हें लौटा देंगे और उनसे हम कुछ भी अधिक नहीं माँगेंगे। हे नहेमायाह, तू जैसा कहता है, हम वैसा ही करेंगे।"

इसके बाद मैंने याजकों को बुलाया। मैंने धनी लोगों और हाकिमों से यह प्रतिज्ञा करवाई कि जैसा उन्होंने कहा है, वे वैसा ही करेंगे।
13इसके बाद मैंने अपने कपड़ों की सलवटें फाड़ते हुए कहा, "हर उस व्यक्ति के साथ, जो अपने वचन को नहीं निभायेगा, परमेश्वर तद्नुकूल करेगा। परमेश्वर उन्हें उनके घरों से उखाड़ देगा और उन्होंने जिन भी वस्तुओं के लिये काम किया हैं वे सभी उनके हाथ से जाती रहेंगी! वह व्यक्ति अपना सब कुछ खो बैठेगा!"

मैंने जब इन बातों का कहना समाप्त किया तो सभी लोग इनसे सहमत हो गये। वे सभी बोले, "आमीन!" और फिर उन्होंने यहोवा की प्रशंसा की और इस प्रकार जैसा उन्होंने वचन दिया था, वैसा ही किया

14और फिर यहूदा की धरती पर अपने राज्यपाल काल के दौरान न तो मैंने और न मेरे भाइयों ने उस भोजन को ग्रहण किया जो राज्यपाल के लिये न्यायपूर्ण नहीं था। मैंने अपने भोजन को खरीदने के वास्ते कर चुकाने के लिए कभी किसी पर दबाव नहीं डाला। राजा अर्तक्षत्र केशासन काल के बीसवें साल से बत्तीसवें साल तक मैं वहाँ का राज्यपाल रहा। मैं बारह साल तक यहूदा का राज्यपाल रहा।
15किन्तु मुझ से पहले के राज्यपालों ने लोगों के जीवन को दूभर बना दिया था। वे राज्यपाल लोगों पर लगभग एक पौंड चाँदी चालीस शकेल देने के लिए दबाव डाला करते थे। उन लोगों पर वे खाना और दाखमधु देने के लिये भी दबाव डालते थे। उन राज्यपालों के नीचे के हाकिम भी लोगों पर हुकूमत चलाते थे और जीवन को और अधिक दूभर बनाते रहते थे। किन्तु मैं क्योंकि परमेश्वर का आदर करता था, और उससे डरता था, इसलिए मैंने कभी वैसे काम नहीं किये।
16नगर परकोटे की दीवार को बनाने में मैंने कड़ी मेहनत की थी। वहाँ दीवार पर काम करने के लिए मेरे सभी लोग आ जुटे थे!

17मैं, अपने भोजन की चौकी पर नियमित रूप से हाकिमों समेत एक सौ पचास यहूदियों को खाने पर बुलाया करता था। मैं चारों ओर के देशों के लोगों को भी भोजन देता था जो मेरे पास आया करते थे।
18मेरे साथ मेरी मेज़ पर खाना खाने वाले लोगों के लिये इतना खाना सुनिश्चित किया गया था: एक बैल, छ: तगड़ी भेड़ें और अलग–अलग तरीके के पक्षी। इसके अलावा हर दसों दिन मेरी मेज़ पर हर प्रकार का दाखमधु लाया जाता था। फिर भी मैंने कभी ऐसे भोजन की मांग नहीं की, जो राज्यपाल के लिए अनुमोदित नहीं था। मैंने अपने भोजन का दाम चुकाने के लिये कर चुकाने के वास्ते, उन लोगों पर कभी दबाव नहीं डाला। मैं यह जानता था कि वे लोग जिस काम को कर रहे हैं वह बहुत कठिन है।
19हे परमेश्वर, उन लोगों के लिये मैंने जो अच्छा किया है, तू उसे याद रख।

अधिक समस्याएँ

6 इसके बाद सम्बल्लत, तोबियाह, अरब के रहने वाले गेशेम तथा हमारे दूसरे शत्रुओं ने यह सुना कि मैं परकोटे की दीवार का निर्माण करा चुका हूँ। हम उस दीवार में दरवाजे बना चुके थे किन्तु तब तक दरवाजों पर जोड़ियाँ नहीं चढ़ाई गई थीं।
2सो सम्बल्लत और गेशेम ने मेरे पास यह सन्देश भिजवाया: "नहेमायाह, तुम आकर हमसे मिलो। हम ओनो के मैदान में कैफरीम नाम के कस्बे में मिल सकते हैं।" किन्तु उनकी योजना तो मुझे हानि पहुँचाने की थी।

3सो मैंने उनके पास इस उत्तर के साथ सन्देश भेज दिया: "मैं यहाँ महत्त्वपूर्ण काम में लगा हूँ। सो मैं नीचे तुम्हारे पास नहीं आ सकता। मैं सिर्फ इसलिए काम बन्द नहीं करना चाहूँगा कि तुम्हारे पास आकर तुमसे मिल सकूँ।"

4सम्बल्लत और गेमेश ने मेरे पास चार बार वैसे ही सन्देश भेजे और हर बार मैंने भी उन्हें वही उत्तर भिजवा दिया।
5फिर पाँचवी बार सम्बल्लत ने उसी सन्देश के साथ अपने सहायक को मेरे पास भेजा। उसके हाथ में एक पत्र था जिस पर मुहर नहीं लगी थी।
6उस पत्र में लिखा था: "चारों तरफ एक अफवाह फैली हुई है। हर कहीं लोग उसी बात की चर्चा कर रहे हैं और गेमेश का कहना है कि वह सत्य है। लोगों का कहना है कि तू और यहूदी, राजा से बगावत की योजना बना रहे हो और इसी लिए तू यरूशलेम के नगर

परकोटे का निर्माण कर रहे हो। लोगों का यह भी
कहना है कि तू ही यहूदियों का नया राजा बनेगा।
7"और यह अफ़वाह भी है कि तूने यरूशलेम में
अपने विषय में यह घोषणा करने के लिए भविष्यवक्ता
भी चुन लिये हैं: 'यहूदा में एक राजा है!'
"नहेमायाह! अब मैं तुझे चेतावनी देता हूँ। राजा अर्तक्षत्र
इस विषय की सुनवाई करेगा सो हमारे पास आ और
हमसे मिल कर इस बारे में बातचीत कर।"
8सो मैंने सम्बल्लत के पास यह उत्तर भिजवा दिया:
"तुम जैसा कह रहे हो वैसा कुछ नहीं हो रहा है। यह
सब बातें तुम्हारी अपनी खोपड़ी की उपज हैं।"
9हमारे शत्रु बस हमें डराने का जतन कर रहे थे। वे
अपने मन में सोच रहे थे, "यहूदी लोग डर जायेंगे और
काम को चलता रखने के लिये बहुत निर्बल पड़ जायेंगे
और फिर परकोटे की दीवार पूरी नहीं हो पायेगी।"
किन्तु मैंने अपने मन में यह विनती की, "परमेश्वर
मुझे मजबूत बना।"
10मैं एक दिन दलायाह के पुत्र शमायाह के घर गया।
दलायाह महेतबेल का पुत्र था। शमायाह को अपने घर
में ही रुकना पड़ता था। शमायाह ने कहा,
"नहेमायाह आओ हम परमेश्वर के मन्दिर के भीतर
मिले। आओ चले भीतर हम मन्दिर के और बन्द द्वारों
को कर लें आओ, वैसा करें हम क्यों? क्योंकि लोग है
आ रहे मारने को तुझको। वे आ रहे हैं आज रात मार
डालने को तुझको।"
11किन्तु मैंने शमायाह से कहा, "क्या मेरे जैसे किसी
व्यक्ति को भाग जाना चाहिए? तुम तो जानते ही हो कि
मेरे जैसे व्यक्ति को अपने प्राण बचाने के लिये मन्दिर में
नहीं भाग जाना चाहिए। सो मैं वहाँ नहीं जाऊँगा!"
12मैं जानता था कि शमायाह को परमेश्वर ने नहीं
भेजा है। मैं जानता था कि मेरे विरुद्ध वह इस लिये ऐसी
झूठी भविष्यवाणियाँ कर रहा है कि तोबियाह और
सम्बल्लत ने उसे वैसा करने के लिए धन दिया है।
13शमायाह को मुझे तंग करने और डराने के लिये
भाड़े पर रखा गया था। वे यह चाहते थे कि डर कर
छिपने के लिये मन्दिर में भाग कर मैं पाप करू ताकि
मेरे शत्रुओं के पास मुझे लज्जित करने और बदनाम
करने का कोई आधार हो।
14हे परमेश्वर! तोबियाह और सम्बल्लत को याद
रख। उन बुरे कामों को याद रख जो उन्होंने किये हैं।
उस नबिया नोअद्याह तथा उन नबियों को याद रख जो
मुझे भयभीत करने का जतन करते रहे हैं।

परकोटा पूरा हो गया

15इस प्रकार एलूल* नाम के महीने की पच्चीसवीं
तारीख को यरूशलेम का परकोटा बनकर तैयार हो
गया। परकोटे की दीवार को बनकर पूरा होने में बावन
दिन लगे। **16**फिर हमारे सभी शत्रुओं ने सुना कि हमने
परकोटा बनाकर तैयार कर लिया है। हमारे आस-पास
के सभी देशों ने देखा कि निर्माण कार्य पूरा हो चुका है।
इससे उनकी हिम्मत टूट गयी क्योंकि वे जानते थे कि
हमने यह कार्य हमारे परमेश्वर की सहायता से पूरा
किया है।
17इसके अतिरिक्त उन दिनों जब वह दीवार बन
कर पूरी हो चुकी थी तो यहूदा के धनी लोग तोबियाह
को पत्र लिख-लिख कर पत्र भेजने लगे, तोबियाह
उनके पत्रों का उत्तर दिया करता। **18**वे इन पत्रों को
इसलिए भेजा करते थे कि यहूदा के बहुत से लोगों ने
उसके प्रति वफादार बने रहने की कसम उठाई हुई
थी। इसका कारण यह था कि वह आरह के पुत्र
शकम्याह का दामाद था तथा तोबियाह के पुत्र यहोहानान
ने मशुल्लाम की पुत्री से विवाह किया था। मशुल्लाम
बेरेक्याह का पुत्र था, **19**तथा अतीतकाल में उन लोगों
ने तोबियाह को एक विशेष वचन भी दे रखा था। सो वे
लोग मुझसे कहते रहते थे कि तोबियाह कितना अच्छा
है और उधर वे, जो काम मैं किया करता था, उनके
बारे में तोबियाह को सूचना देते रहते थे। तोबियाह मुझे
डराने के लिये पत्र भेजता रहता था।
7 इस प्रकार हमने दीवार बनाने का काम पूरा
किया। फिर हमने द्वार पर दरवाज़े लगाये। फिर
हमने उस द्वार के पहरेदारों, मन्दिर के गायकों तथा
लेवियों को चुना जो मन्दिर में गीत गाते और याजकों
की मदद करते थे। **2**इसके बाद मैंने अपने भाई हनानी
को यरूशलेम का हाकिम नियुक्त कर दिया। मैंने हनन्याह
नाम के एक और व्यक्ति को चुना और उसे किलेदार
नियुक्त कर दिया। मैंने हनानी को इसलिए चुना था कि
वह बहुत ईमानदार व्यक्ति था तथा वह परमेश्वर से
आम लोगों से कहीं अधिक डरता था। **3**तब मैंने हनानी
और हनन्याह से कहा, "तुम्हें हर दिन यरूशलेम का
द्वार खोलने से पहले घंटों सूर्य चढ़ जाने के बाद तक
इंतजार करते रहना चाहिए और सूर्य छुपने से पहले ही
तुम्हें दरवाजे बन्द करके उन पर ताला लगा देना चाहिए।
यरूशलेम में रहने वाले लोगों में से तुम्हें कुछ और लोग
चुनने चाहिए और उन्हें नगर की रक्षा करने के लिए
विशेष स्थानों पर नियुक्त करो तथा कुछ लोगों को
उनके घरों के पास ही पहरे पर लगा दो।"

लौटे हुए बन्दियों की सूची

4अब देखो, वह एक बहुत बड़ा नगर था जहाँ पर्याप्त
स्थान था। किन्तु उसमें लोग बहुत कम थे तथा मकान
अभी तक फिर से नहीं बनाये गये थे। **5**इसलिए मेरे
परमेश्वर ने मेरे मन में एक बात पैदा की कि मैं सभी
लोगों की एक सभा बुलाऊँ सो मैंने सभी महत्त्वपूर्ण

एलूल यह समय लगभग 443 ई.पू. अगस्त-सितंबर है।

लोगों को, हाकिमों को तथा सर्वसाधारण को एक साथ बुलाया। मैंने यह काम इसलिए किया था कि मैं उन सभी परिवारों की एक सूची तैयार कर सकूँ। मुझे ऐसे लोगों की पारिवारिक सूचियाँ मिलीं जो दासता से सबसे पहले छूटने वालों में से थे। वहाँ जो लिखा हुआ मुझे मिला, वह इस प्रकार है।

6ये इस क्षेत्र के वे लोग हैं जो दासत्व से मुक्त होकर लौटे (बाबेल का राजा, नबूकदनेस्सर इन लोगों को बन्दी बनाकर ले गया था। ये लोग यरूशलेम और यहूदा को लौटे। हर व्यक्ति अपने-अपने नगर में चला गया।
7ये लोग जरुब्बाबेल, येशू, नहेमायाह, अजर्याह, राम्याह, नहमानी, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पेरेत, बिग्वै, नहूम और बाना के साथ लौटे थे।)

इस्राएल के लोगों की सूची:

8 पॅरोश के वंशज 2,172
9 सपत्याह के वंशज 372
10 आरह के वंशज 652
11 पहत्मोआब के वंशज (येशू और योआब के परिवार के संतानें): 2,818
12 एलाम के वंशज 1,254
13 जत्तू के वंशज 845
14 जक्कै के वंशज 760
15 बिन्नूई के वंशज 648
16 बेबै के वंशज 628
17 अजगाद की संतानें 2,322
18 अदोनीकाम के वंशज 667
19 बिग्वै के वंशज 2,067
20 आदीन के वंशज 655
21 आतेर के वंशज (हिजीकयाह के परिवार से): 98
22 हाशम के वंशज 328
23 बेसै के वंशज 324
24 हारीप के वंशज 112
25 गिबोन के वंशज 95
26 बेतलेहेम और नतोपा नगरों के लोग 188
27 अनातोत नगर के लोग 128
28 बेतजमावत नगर के लोग 42
29 किर्यत्यारीम, कपीर तथा बेरोत नगरों के लोग 743
30 रामा और गेबा नगरों के लोग 621
31 मिकपास नगर के लोग 122
32 बेतेल और ऐ नगर के लोग 123
33 नबो नाम के दूसरे नगर के लोग 52
34 एलाम नाम के दूसरे नगर के लोग 1,254
35 हरीम नाम के नगर के लोग 320
36 यरीहो नगर के लोग 345
37 लोद, हादीद और ओनो नाम के नगरों के लोग 721
38 सना नाम के नगर के लोग 3,930

39याजकों की सूची:
यदायाह के वंशज (येशू के परिवार से): 973
40 इम्मेर के वंशज 1,052
41 पशहूर के वंशज 1,247
42 हारीम के वंशज 117

43लेवी परिवार समूह के लोगों की सूची:
येशू के वंशज (कदमीएल के द्वारा होदवा के परिवार से) 74
44गायकों की सूची:
आसाप के वंशज 148
45द्वारपालों की सूची:
शल्लूम, आतेर, तल्मोन, अक्कूब, हतीता और शोबै के वंशज 138

46मन्दिर के सेवकों की सूची:
सीहा, हसूपा और तब्बाओत की सन्तानें,
47 केरोस, सीआ और पादोन की सन्तानें,
48 लबाना, हगाबा और शल्मै के वंशज,
49 हानान, गिद्देल, गहर के वंशज,
50 राया, रसीन और नकोदा की संतानें,
51 गज्जाम, उज्जा और पासेह के वंशज,
52 बेसै, मूनीम, नपूशस के वंशज,
53 बकबूक, हकूपा, हर्हूर के वंशज,
54 बसलीत, महीदा और हर्षा के वंशज,
55 बर्कोस, सीसरा और तेमेह की सन्ताने,
56 नसीह और हतीपा के वंशज,

57सुलैमान के सेवकों के वंशज:
सोतै, सोपेरेत और परीदा के वंशज
58 याला दर्कोन और गिद्देल के वंशज,
59 शपत्याह, हत्तील, पोकेरेत-सवायीम और आमोन की संतानें,
60 मन्दिर के सभी सेवक और सुलैमान के सेवकों के वंशज थे। 392

61यह उन लोगों की एक सूची है जो तेलमेलह, तेलहर्षा, करुब अद्दोन तथा इम्मेर नाम के नगरों से यरूशलेम आये थे। किन्तु ये लोग यह प्रमाणित नहीं कर सके कि उनके परिवार वास्तव में इस्राएल के लोगों से सम्बन्धित थे:
62 दलायाह, तोबियाह और नेकोदा के वंशज थे। 642

63यह एक उनकी सूची है जो याजक थे। ये वे लोग
थे जो यह प्रमाणित नहीं कर सके थे कि उनके पूर्वज
वास्तव में इस्राएल के लोगों के वंशज थे। होबायाह,
हक्कोस और बर्जिल्लै के वंशज (बर्जिलै वह व्यक्ति था
जिस ने गिलाद निवासी बर्जिल्लै की एक पुत्री से विवाह
किया था। इसीलिए उसे यह नाम दिया गया था।)

64जिन लोगों ने अपने परिवारों के ऐतिहासिक दस्तावेजों
को खोजा और वे उन्हें पा नहीं सके, उनका नाम
याजकों की इस सूची में नहीं जोड़ा जा सका। वे शुद्ध
नहीं थे सो याजक नहीं बन सकते थे। 65सो राज्यपाल ने
उन्हें एक आदेश दिया जिसके तहत वे किसी भी अति
पवित्र भोजन को नहीं खा सकते थे। उस भोजन में से
वे उस समय तक कुछ भी नहीं खा सकते थे जब तक
ऊरीम और तुम्मीम का उपयोग करने वाला महायाजक
इस बारे में परमेश्वर की अनुमति न ले ले।

66-67उस समूचे समूह में लोगों की संख्या 42,360
थी और उनके पास 7337 दास और दासियाँ थीं,
उनके पास 245 गायक और गायिकाएँ थीं। 68-69उनके
पास 736 घोड़े थे, 245 खच्चर, 435 ऊँट तथा 6,720
गधे थे।

70परिवार के कुछ मुखियाओं ने उस काम को बढ़ावा
देने के लिए धन दिया था। राज्यपाल के द्वारा निर्माण–कोष
में उन्नीस पौंड सोना दिया गया था। उसने याजकों के
लिये पचास कटोरे और पाँच सौ तीस जोड़ी कपड़े भी
दिये थे। 71परिवार के मुखियाओं ने तीन सौ पचहत्तर
पौंड सोना उस काम को बढ़ावा देने के लिये निर्माण
कोष में दिया और दो हजार दो सौ मीना चाँदी उनके
द्वारा भी दी गयी। 72दूसरे लोगों ने कुल मिला कर बीस
हजार दर्कमोन सोना उस काम को बढ़ावा देने के लिए
निर्माण कोष को दिया। उन्होंने दो हजार मीना चाँदी
और याजकों के लिए सढ़सठ जोड़े कपड़े भी दिये।

73इस प्रकार याजक लेवी परिवार समूह के लोग,
गायक और मन्दिर के सेवक अपने–अपने नगरों में
बस गये और इस्राएल के दूसरे लोग भी अपने–अपने
नगरों में रहने लगे और फिर साल के सातवें महीने
तक इस्राएल के सभी लोग अपने–अपने नगरों में बस
गये।

एज्रा द्वारा व्यवस्था–विधान का पढ़ा जाना

8 फिर साल के सातवें महीने में इस्राएल के सभी
लोग आपस में इकट्ठे हुए। वे सभी एक थे और
इस प्रकार एकमत थे जैसे मानो वे कोई एक व्यक्ति हो।
जलद्वार के सामने के खुले चौक में वे आपस में मिले।
एज्रा नाम के शिक्षक से उन सभी लोगों ने मूसा की
व्यवस्था के विधान की पुस्तक को लाने के लिये
कहा। यह वही व्यवस्था का विधान है जिसे इस्राएल के
लोगों को यहोवा ने दिया था। 2सो याजक एज्रा परस्पर
इकट्ठे हुए। उन लोगों के सामने व्यवस्था के विधान
की पुस्तक को ले आया। उस दिन महीने की पहली
तारीख़ थी और वह महीना वर्ष का सातवाँ महीना था।
उस सभा में पुरुष थे, स्त्रियाँ थीं, और वे सभी थे जो
बातों को सुन और समझ सकते थे। 3एज्रा ने भोर के
तड़के से लेकर दोपहर तक ऊँची आवाज में इस व्यवस्था
के विधान की पुस्तक से पाठ किया। उस समय एज्रा
का मुख उस खुले चौक की तरफ था जो जल–द्वार के
सामने पड़ता था। उसने सभी पुरुषों, स्त्रियों और उन
सभी लोगों के लिये उसे पढ़ा जो सुन–समझ सकते थे।
सभी लोगों ने व्यवस्था के विधान की पुस्तक को
सावधानी के साथ सुना और उस पर ध्यान दिया।

4एज्रा लकड़ी के उस ऊँचे मंच पर खड़ा था जिसे इस
विशेष अवसर के लिये ही बनाया गया था। एज्रा के
दाहिनी ओर मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह,
हिल्कियाह और मासेयाह खड़े थे और एज्रा के बार्यी
ओर पदायाह, मीशाएल, मल्कियाह, हाशूम, हश्बद्दाना,
जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए थे।

5फिर एज्रा ने उस पुस्तक को खोला। एज्रा सभी लोगों
को दिखायी दे रहा था क्योंकि वह सब लोगों से ऊपर
एक ऊँचे मंच पर खड़ा था। एज्रा ने व्यवस्था के विधान
की पुस्तक को जैसे ही खोला, सभी लोग खड़े हो गये ।
6एज्रा ने महान परमेश्वर यहोवा की स्तुति की और
सभी लोगों ने अपने हाथ ऊपर उठाते हुए एक स्वर में
कहा, "आमीन! आमीन!" और फिर सभी लोगों ने
अपने सिर नीचे झुका दिये और धरती पर दण्डवत
करते हुए यहोवा की उपासना की।

7लेवीवंश परिवार समूह के इन लोगों ने वहाँ खड़े हुए
सभी लोगों को व्यवस्था के विधान की शिक्षा दी।
लेवीवंश के उन लोगों के नाम थे: येशू, बानी, शेरेब्याह,
यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदियाह, मासेयाह, कलिता,
अजर्याह, योजबाद, हानान, और पलायाह। 8लेवीवंश के
इन लोगों ने परमेश्वर की व्यवस्था के विधान की
पुस्तक का पाठ किया। उन्होंने उसकी ऐसी व्याख्या
की कि लोग उसे समझ सकें। उसका अभिप्राय: क्या
है, इसे खोल कर उन्होंने समझाया। उन्होंने यह इसलिए
किया ताकि जो पढ़ा जा रहा है, लोग उसे समझ सकें।

9इसके बाद राज्यपाल नहेमायाह याजक तथा शिक्षक
एज्रा तथा लेवीवंश के लोग जो लोगों को शिक्षा दे रहे
थे, बोले। उन्होंने कहा, "आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर
यहोवा का विशेष दिन है दु:खी मत होवो, विलाप मत
करो।" उन्होंने ऐसा इसलिये कहा था कि लोग व्यवस्था
के विधान में परमेश्वर का सन्देश सुनते हुए रोने लगे
थे।

10नहेमायाह ने कहा, "जाओ, और जाकर उत्तम
भोजन और शर्बत का आनन्द लो। और थोड़ा खाना
और शर्बत उन लोगों को भी दो जो कोई खाना नहीं

बनाते हैं। आज यहोवा का विशेष दिन है। दु:खी मत
रहो! क्योंं? क्योंकि परमेश्वर का आनन्द तुम्हें सुदृढ़
बनायेगा।"

11लेवीवंश परिवार के लोगों ने लोगों को शांत होने
में मदद की। उन्होंने कहा, "चुप हो जाओ, शांत रहो,
यह एक विशेष दिन है। दु:खी मत रहो।"

12इसके बाद सभी लोग उस विशेष भोजन को खाने
के लिये चले गये। अपने खाने पीने की वस्तुओं, को
उन्होंने आपस में बाँटा। वे बहुत प्रसन्न थे और इस तरह
उन्होंने उस विशेष दिन को मनाया और आखिरकार
उन्होंने यहोवा की उन शिक्षाओं को समझ लिया जिन्हें
उनको समझाने का शिक्षक जतन किया करते थे।

13फिर महीने की दूसरी तारीख को सभी परिवारों
के मुखिया, एज्रा, याजकों और लेवी वंशियो, से मिलने
गये और व्यवस्था के विधान के वचनों को समझने के
लिए सभी लोग शिक्षक एज्रा को घेर कर खड़े हो गये।

14-15उन्होंने समझ कर यह पाया कि व्यवस्था के
विधान में यह आदेश दिया गया है कि साल के सातवें
महीने में इस्राएल के लोगों को एक विशेष पवित्र पर्व
मनाने के लिये यरूशलेम जाना चाहिए। उन्हें चाहिए कि
वे अस्थायी झोपड़ियाँ बनाकर वहाँ रहें। लोगों को यह
आदेश यहोवा ने मूसा के द्वारा दिया था। लोगों से यह
अपेक्षा की गयी थी कि वे इसकी घोषणा करें। लोगों
को चाहिए था कि वे अपने नगरों और यरूशलेम से
गुजरते हुए इन बातों की घोषणा करें: "पहाड़ी प्रदेश में
जाओ और वहाँ से तरह तरह के जैतून के पेड़ों की
टहनियाँ ले कर आओ। हिना (मेंहदी), खजूर और
छायादार सघन वृक्षों की शाखाएँ लाओ, फिर उन टहनियों
से अस्थायी आवास बनाओ। वैसा ही करो जैसा व्यवस्था
का विधान बनाता है।"

16सो लोग बाहर गये और उन-उन पेड़ों की टहनियाँ
ले आये और फिर उन टहनियों से उन्होंने अपने लिये
अस्थायी झोपड़ियाँ बना लीं। अपने घर की छतों पर
और अपने-अपने आँगनों में उन्होंने झोपड़ियाँ डाल
लीं। उन्होंने मन्दिर के आँगन जल-द्वार के निकट के
खुले चौक और एप्रैम द्वार के निकट झोपड़ियाँ बना
लीं। 17इस्राएल के लोगों की उस समूची टोली ने जो
बंधुआपन से छूट कर आयी थी, आवास बना लिये और
वे अपनी बनाई झोंपड़ियों में रहने लगे। नून के पुत्र
यहोशू के समय से लेकर उस दिन तक इस्राएल के
लोगों ने झोंपड़ियों के त्यौहार को कभी इस तरह नहीं
मनाया था। हर व्यक्ति आनन्द मग्न था!

18उस पर्व के हर दिन एज्रा उन लोगों के लिये
व्यवस्था के विधान की पुस्तक में से पाठ करता रहा।
उस पर्व के पहले दिन से अंतिम दिन तक एज्रा उन
लोगों को व्यवस्था का विधान पढ़ कर सुनाता रहा।
इस्राएल के लोगों ने सात दिनों तक उस पर्व को मनाया।
फिर व्यवस्था के विधान के अनुसार आठवें दिन लोग
एक विशेष सभा के लिए परस्पर एकत्र हुए।

इस्राएल के लोगों द्वारा अपने पापों का अंगीकार

9 फिर उसी महीने की चौबीसवीं तारीख को एक
दिन के उपवास के लिये इस्राएल के लोग परस्पर
एकत्र हुए। उन्होंने यह दिखाने के लिये कि वे दु:खी
और बेचैन हैं, उन्होंने शोक वस्त्र धारण किये, अपने
अपने सिरों पर राख डाली। 2वे लोग जो सच्चे
इस्राएली थे, उन्होंने बाहर के लोगों से अपने आपको
अलग कर दिया। इस्राएली लोगों ने मन्दिर में खड़े
होकर अपने और अपने पूर्वजों के पापों को स्वीकार
किया। 3वे लोग वहाँ लगभग तीन घण्टे खड़े रहे और
उन्होंने अपने यहोवा परमेश्वर की व्यवस्था के विधान
की पुस्तक का पाठ किया और फिर तीन घण्टे और
अपने यहोवा परमेश्वर की उपासना करते हुए उन्होंने
स्वयं को नीचे झुका लिया तथा अपने पापों को
स्वीकार किया।

4फिर लेवीवंशी येशू, बानी, कदमीएल, शबन्याह, बुन्नी,
शेरेब्याह, बानी और कनानी सीढ़ियों पर खड़े हो गये
और उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा को ऊँचे स्वर में
पुकारा। 5इसके बाद लेवीवंशी येशू, कदमीएल, बानी,
हशबन्याह, शेरेब्याह, होदियाह शबन्याह और पतहयाह
ने फिर कहा। वे बोले: "खड़े हो जाओ और अपने
यहोवा परमेश्वर की स्तुति करो!"

परमेश्वर सदा से जावित था! और सदा ही जीवित
रहेगा! लोगों को चाहिये कि स्तुति करें तेरे महिमावान
नाम की! सभी आशीषों से और सारे गुण-गानों से नाम
ऊपर उठे तेरा!

6तू तो परमेश्वर है! यहोवा, बस तू ही परमेश्वर है!
आकाश को तूने बनाया है! सर्वोच्च आकाशों की रचना
की तूने, और जो कुछ है उनमें सब तेरा बनाया है!
धरती की रचना की तूने ही, और जो कुछ धरती पर
है! सागर को, और जो कुछ है सागर में! तूने बनाया है
हर किसी वस्तु को जीवन तू देता है! सितारे सारे
आकाश के, झुकते हैं सामने तेरे और उपासना करते
हैं तेरी!

7यहोवा परमेश्वर तू ही है, अब्राम को तुने चुना था।
राह उसको तूने दिखाई थी, बाबेल के उर से निकल
जाने की तूने ही बदला था उसका नाम और उसे दिया
नाम इब्राहीम का।

8तूने यह देखा था कि वह सच्चा और निष्ठावान था
तेरे प्रति। कर लिया तूने साथ उसके वाचा एक उसे देने
को धरती कनान की वचन दिया तूने धरती, जो हुआ
करती थी हित्तियों की और एमोरीयों की। धरती, जो
हुआ करती थी परिज्जियों, यबूसियों और गिर्गाशियों
की! किन्तु वचन दिया तूने उस धरती को देने का

इब्राहीम की संतानों को और अपना वचन वह पूरा
किया तूने क्यों? क्योंकि तू उत्तम है।
9यहोवा देखा था तड़पते हुए तूने हमारे पूर्वजों को
मिस्र में। पुकारते सहायता को लाल सागर के तट पर
तूने उनको सुना था!
10फ़िरौन को तूने दिखाये थे चमत्कार। तूने हाकिमों
को उसके और उसके लोगों को दिखाये थे अद्‌भुत
कर्म। तुझको यह ज्ञान था कि सोचा करते थे मिस्री कि
वे उत्तम हैं हमारे पूर्वजों से। किन्तु प्रमाणित कर दिया
तूने कि तू कितना महान है! और है उसकी याद बनी
हुई उनको आज तक भी!
11सामने उनके लाल सागर को विभक्त किया था
तूने, और वे पार हो गये थे सूखी धरती पर चलते हुए!
मिस्र के सैनिक पीछा कर रहे थे उनका। किन्तु डुबो
दिया तूने था शत्रु को सागर में। और वे डूब गये सागर में
जैसे डूब जाता है पानी में पत्थर।
12मीनार जैसे बादल से दिन में उन्हें राह तूने दिखाई
और अग्नि के खंभे का प्रयोग कर रात में उनको तूने
दिखाई राह। मार्ग को तूने उनके इस प्रकार कर दिया
ज्योर्तिमय और दिखा दिया उनको कि कहाँ उन्हें जाना
है।
13फिर तू उतरा सीनै पहाड़ पर और आकाश से तूने
था उनको सम्बोधित किया। उत्तम विधान दे दिया तूने
उन्हें सच्ची शिक्षा को था तूने दिया उनको। व्यवस्था
का विधान उन्हें तूने दिया और तूने दिये आदेश उनको
बहुत उत्तम!
14तूने बताया उन्हें सब्त यानी अपने विश्राम के विशेष
दिन के विषय में। तूने अपने सेवक मूसा के द्वारा
उनको आदेश दिये। व्यवस्था का विधान दिया और दी
शिक्षाएँ।
15जब उनको भूख लगी, बरसा दिया भोजन था तूने
आकाश से। जब उन्हें प्यास लगी, चट्टान से प्रकट
किया तूने था जल को और कहा तूने था उनसे 'आओ,
ले लो इस प्रदेश को।' तूने वचन दिया उन को उठाकर
हाथ यह प्रदेश देने का उनको!
16 किन्तु वे पूर्वज हमारे, हो गये अभिमानी; वे हो गये
हठी थे। कर दिया उन्होंने मना आज्ञाएँ मानने से तेरी।
17कर दिया उन्होंने मना सुनने से। वे भूले उन अचरज
भरी बातों को जो तूने उनके साथ की थी। वे हो गये
जिद्दी! विद्रोह उन्होंने किया, और बना लिया अपना एक
नेता जो उन्हें लौटा कर ले जाये। फिर उनकी उसी
दासता में किन्तु तू तो है दयावान परमेश्वर! तू है दयालू
और करुणापूर्ण तू है। धैर्यवान है तू और प्रेम से भरा है
तू! इसलिये तूने था त्यागा नहीं उनको।
18चाहे उन्होंने बना लिया सोने का बछड़ा और कहा,
'बछड़ा अब देव है तुम्हारा' इसी ने निकाला था तुम्हें
मिस्र से बाहर किन्तु उन्हें तूने त्यागा नहीं!'
19तू बहुत ही दयालु है! इसलिये तूने उन्हें मरुस्थल में
त्यागा नहीं। दूर उनसे हटाया नहीं दिन में तूने बादल के
खम्भें को मार्ग तू दिखाता रहा उनको। और रात में
तूने था दूर किया नहीं उनसे अग्नि के पुंज को! प्रकाशित
तू करता रहा रास्ते को उनके। और तू दिखाता रहा
कहाँ उन्हें जाना है!
20निज उत्तम चेतना, तूने दी उनको ताकि तू विवेकी
बनाये उन्हें। खाने को देता रहा, तू उनको 'मन्ना' और
प्यास को उनकी तू देता रहा पानी!
21तूने रखा उनका ध्यान चालीस बरसों तक मरुस्थल
में। उन्हें मिली हर वस्तु जिसकी उनको दरकार थी।
वस्त्र उनके फटे तक नहीं पैरों में उनके कभी नहीं
आई सूजन कभी किसी पीड़ा में।
22यहोवा तूने दिये उनको राज्य, और उनको दी
जातियाँ और दूर–सुदूर के स्थान थे उनको दिये जहाँ
बसते थे कुछ ही लोग धरती उन्हें मिल गयी सीहोन की
सीहोन जो हशबोन का राजा था धरती उन्हें मिल गयी
ओग की ओग जो बाशान का राजा था।
23वंशज दिये तूने अनन्त उन्हें जितने अम्बर में तारे
हैं। ले आया उनको तू उस धरती पर। जिसके लिये उन
के पूर्वजों को तूने आदेश दिया था कि वे वहाँ जाएँ और
अधिकार करें उस पर।
24धरती वह उन वंशजों ने ले ली। वहाँ रह रहे
कनानियों को उन्होंने हरा दिया। पराजित कराया तूने
उनसे उन लोगों को। साथ उन प्रदेशों के और उन
लोगों के वे जैसा चाहे वैसा करें ऐसा था तूने करा दिया।
25शक्तिशाली नगरों को उन्होंने हरा दिया। कब्जा
किया उपजाँऊ धरती पर उन्होंने। उत्तम वस्तुओं से भरे
हुए ले लिये उन्होंने घर; खुदे हुए कुँओं को ले लिया
उन्होंने। ले लिए उन्होंने थे बगीचे अँगूर के। जैतून के
पेड़ और फलों के पेड़ भर पेट खाया वे करते थे सो वे
हो गये मोटे। तेरी दी सभी अद्‌भुत वस्तुओं का आनन्द
वे लेते थे।
26और फिर उन्होंने मुँह फेर लिया तुझसे था। तेरी
शिक्षाओं को उन्होंने फेंक दिया दूर तेरे नबियों को मार
डाला उन्होंने था। ऐसे नबियों को जो सचेत करते थे
लोगों को। जो जतन करते लोगों को मोड़ने का तेरी
ओर। किन्तु हमारे पूर्वजों ने भयानक कार्य किये तेरे
साथ।
27सो तूने उन्हें पड़ने दिया उनके शत्रुओं के हाथों
में। शत्रु ने बहुतेरे कष्ट दिये उनको जब उन पर विपदा
पड़ी हमारे पूर्वजों ने थी दुहाई दी तेरी। और स्वर्ग में तूने
था सुन लिया उनको। तू बहुत ही दयालु है भेज दिया
तूने था लोगों को उनकी रक्षा के लिये। और उन
लोगों ने छुड़ा कर बचा लिया उनको शत्रुओं से उनके।
28किन्तु, जैसे ही चैन उन्हें मिलता था, वैसे ही वे बुरे
काम करने लग जाते बार बार। सो शत्रुओं के हाथों

उन्हें सौंप दिया तूने ताकि वे करें उन पर राज। फिर
तेरी दुहाई उन्होंने दी और स्वर्ग में तूने सुनी उनकी।
और सहायता उनकी की। तू कितना दयालु है! होता
रहा ऐसा ही अनेकों बार!

29तूने चेताया उन्हें। फिर से लौट आने को तेरे विधान
में किन्तु वे थे बहुत अभिमानी। उन्होंने नकार दिया तेरे
आदेश को। यदि चलता है कोई व्यक्ति नियमों पर तेरे
तो सचमुच जीएगा वह किन्तु हमारे पूर्वजों ने तो तोड़ा
था तेरे नियमों को। वे थे हठीले! मुख फेर, पीठ दी थी
उन्होंने तुझे! तेरी सुनने से ही उन्होंने था मना किया।

30तू था बहुत सहनशील, साथ हमारे पूर्वजों के, तूने
उन्हें करने दिया बर्ताव बुरा अपने साथ बरसों तक।
सजग किया तूने उन्हें अपनी आत्मा से। उनको देने
चेतावनी भेजा था नबियों को तूने। किन्तु हमारे पूर्वजों
ने तो उनकी सुनी ही नहीं। इसलिए तूने था दूसरे देशों
के लोगों को सौंप दिया उनको।

31किन्तु तू कितना दयालु है! तूने किया था नहीं पूरी
तरह नष्ट उन्हें। तूने तजा नहीं उनको था। हे परमेश्वर!
तू ऐसा दयालु और करुणापूर्ण ऐसा है!

32परमेश्वर हमारा है, महान परमेश्वर! तू एक वीर
है ऐसा जिससे भय लगता है और शक्तिशाली है जो
निर्भर करने योग्य तू है। पालता है तू निज वचन को!
यातनाएँ बहुत तेरी भोग हम चुके हैं। और दुःख हमारे
हैं, महत्त्वपूर्ण तेरे लिये। साथ में हमारे राजाओं के और
मुखियाओं के घटी थीं बातें बुरी। याजकों के साथ में
हमारे और साथ में नबियों के और हमारे सभी लोगों के
साथ घटी थीं बातें बुरी। अश्शूर के राजा से लेकर आज
तक वे घटी थीं बातें भयानक!

33किन्तु हे परमेश्वर! जो कुछ भी घटना है साथ
हमारे घटी उसके प्रति न्यायपूर्ण तू रहा। तू तो अच्छा ही
रहा, बुरे तो हम रहे।

34 हमारे राजाओं ने मुखियाओं, याजकों ने और
पूर्वजों ने नहीं पाला तेरी शिक्षाओं को! उन्होंने नहीं
दिया कान तेरे आदेशों, तेरी चेतावनियाँ उन्होंने सुनी ही
नहीं।

35यहाँ तक कि जब पूर्वज हमारे अपने राज्य में रहते
थे, उन्होंने नहीं सेवा की तेरी! छोड़ा उन्होंने नहीं बुरे
कर्मो का करना। जो कुछ भी उत्तम वस्तु उनको तूने
दी थी, उनका रस वे रहे लेते। आनन्द उस धरती का
लेते रहे जो थी सम्पन्न बहुत। और स्थान बहुत सा था
उनके पास! किन्तु उन्होंने नहीं छोड़ी निज बुरी राह।

36और अब हम बने दास हैं; हम दास है उस धरती
पर, जिसको दिया तूने था हमारे पूर्वजों को। तूने यह
धरती थी उनको दी, कि भोगे वे उसका फल और
आनन्द लें उन सभी चीज़ों का जो यहाँ उगती हैं ।

37इस धरती की फसल है भरपूर किन्तु पाप किये
हमने सो हमारी उपज जाती है पास उन राजाओं के
जिनको तूने बिठाया है सिर पर हमारे। हम पर और
पशुओं पर हमारे वे राजा राज करते हैं वे चाहते हैं जैसा
भी वैसा ही करते हैं। हम हैं बहुत कष्ट में।

38सो, सोचकर इन सभी बातों के बारे में हम करते
हैं वाचा एक; जो न बदला जायेगा कभी भी। और इस
वाचा की लिखतम हम लिखते हैं और इस वाचा पर
अंकित करते हैं अपना नाम हाकिम हमारे, लेवी के
वंशज और वे करते हैं हस्ताक्षर लगा कर के उस पर
मुहर।

10 मुहर लगी वाचा पर निम्न लिखित नाम लिखे
थे: हकल्याह का पुत्र राज्यपाल नहेमायाह।
सिदकिय्याह, 2सरायाह, अजर्याह, यिर्मयाह, 3पशहूर,
अमर्याह, मल्किय्याह, 4हत्तूश, शबन्याह, मल्लूक,
5हारीम, मरेमोत, ओबद्याह, 6दानिय्येल, गिन्नतोन, बारुक,
7मशूल्लाम, अबिय्याह, मिय्यामीन, 8माज्याह, बिलगै और
शमायाह। ये उन याजकों के नाम हैं जिन्होंने मुहर लगी
वाचा पर अपने नाम अंकित किये।

9ये उन लेवीवंशियों के नाम हैं जिन्होंने मुहर लगी
वाचा पर अपने नाम अंकित किये: आजन्याह का पुत्र
येशू, हेनादाद का वंशज बिन्नई और कदमिएल 10और
उनके भाइयों के नाम ये थे: शबन्याह, होदियाह, कलीता,
पलायाह, हानान, 11मीका, रहोब, हशब्याह 12जक्कूर,
शेरेब्याह, शकन्याह, 13होदियाह, बानी और बनीन।

14ये नाम उन मुखियाओं के हैं जिन्होंने उस मुहर
लगी वाचा पर अपने नाम अंकित किये: परोश,
पहत–मोआब, एलाम, जत्तू बानी, 15बुन्नी, अजगाद,
बेबै, 16अदोनिय्याह, बिग्वै, आदीन, 17आतेर,
हिजकिय्याह, अज्जूर, 18होदियाह, हाशूम, बेसै, 19हारीफ़,
अनातोत, नोबै, 20मगपिआश, मशूल्लाम, हेजीर,
21मेशजबेल, सादोक, यददू, 22पलत्याह, हानान, अनायाह,
23होशे, हनन्याह, हश्शूब, 24हल्लोहेश, पिलहा, शोबेक,
25रहूम, हशब्ना, माशेयाह, 26अहियाह, हानान, आनान,
27मल्लूक, हारीम, और बाना।

28-29सो अब ये सभी लोग जिनके नाम ऊपर दिये
गये हैं परमेश्वर के सामने यह विशेष प्रतिज्ञा लेतें हैं।
यदि ये अपने वचन का पालन न करें तो उन के साथ
बुरी बातें घटें! ये सभी लोग परमेश्वर के विधान का
पालन करने की प्रतिज्ञा लेते हैं। परमेश्वर का यह
विधान हमें परमेश्वर के सेवक मूसा द्वारा दिया गया
था। ये सभी लोग सभी आदेशों, सभी नियमों और हमारे
यहोवा परमेश्वर के उपदेशों का सावधानीपूर्वक पालन
करने की प्रतिज्ञा लेते हैं। बाकी ये लोग भी प्रतिज्ञा लेते
हैं: याजक लेवीवंशी, द्वारपाल, गायक, यहोवा के भवन
के सेवक, तथा वे सभी लोग जिन्होंने आस–पास रहने
वाले लोगों से, परमेश्वर के नियमों का पालन करने के
लिए, अपने आपको अलग कर लिया था। उन लोगों
की पत्नियाँ, पुत्र–पुत्रियाँ और हर वह व्यक्ति जो सुन

समझ सकता था, अपने भाई बंधुओं, अपने मुखिया के
साथ इस प्रतिज्ञा को अपनाने में सम्मिलित होते हैं कि
परमेश्वर के सेवक मूसा के द्वारा दिये गये विधान का
वे पालन करेंगे। यदि न करें तो उन पर विपत्तियाँ पड़े।
वे सावधानी के साथ अपने स्वामी परमेश्वर के आदेशों,
अध्यादेशों और निर्णयों का पालन करेंगे।

30"हम प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने आस–पास रहने
वाले लोगों के साथ अपनी पुत्रियों का ब्याह नहीं करेंगे
और हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि उनकी लड़कियों
के साथ अपने लड़कों को नहीं ब्याहेंगे।

31"हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सब्त के दिन काम नहीं
करेंगे और यदि हमारे आस–पास रहने वाले लोग सब्त
के दिन बेचने को अनाज या दूसरी वस्तुएँ लायेंगे तो
विश्राम के उस विशेष दिन या किसी भी अन्य विशेष
के दिन, उन वस्तुओं को नहीं खरीदेंगे। हर सातवें बरस
हम न तो अपनी धरती को जोतेंगे और न बोएंगे, तथा
हर सातवें वर्ष चक्र में हम दूसरे लोगों को दिये गये हर
कर्ज को माफ़ कर देंगे।

32"परमेश्वर के भवन का ध्यान रखने के लिये
उसके आदेशों पर चलने के उत्तरदायित्व को हम ग्रहण
करेंगे। हम हर साल एक तिहाई शेकेल हमारे
परमेश्वर के सम्मान में भवन की सेवा, उपासना को
बढ़ावा देने के लिये दिया करेंगे। 33इस धन से उस
विशेष रोटी का खर्च चला करेगा जिसे याजक मन्दिर
की वेदी पर अर्पित करता है। इस धन से ही अन्नबलि
और होमबलि का खर्च उठाया जायेगा। सब्त नये चाँद
के त्यौहार तथा दूसरी सभाओं पर इसी धन से खर्चा
होगा। उन पवित्र चढ़ावों और पापबलियों पर खर्च भी
इस धन से ही किया जायेगा जिनसे इस्राएल के लोग
शुद्ध बनते हैं। इस धन से ही हर उस काम का खर्च
चलेगा जो हमारे परमेश्वर के मन्दिर के लिए आवश्यक
है।

34"हम यानी याजक, लेवीवंशी तथा लोगों ने मिल
कर यह निश्चित करने के लिए पासे फैंके कि हमारे
प्रत्येक परिवार को हर वर्ष एक निश्चित समय हमारे
परमेश्वर के मन्दिर में लकड़ी का उपहार कब लाना
है। वह लकड़ी जिसे हमारे परमेश्वर यहोवा की वेदी
पर जलाया जाता है। हमें इस काम को अवश्य करना
चाहिये क्योंकि यह हमारी व्यवस्था के विधान में लिखा
है।

35"हम अपने फलों के हर पेड़ और अपनी फसल
के पहले फलों को लाने का उत्तरदायित्व भी ग्रहण
करते हैं। हर वर्ष यहोवा के मन्दिर में हम उस फल को
लाकर अर्पित किया करेंगे।

36"क्योंकि व्यवस्था के विधान में यह भी लिखा है
इसलिए हम इसे भी किया करेंगे: हम अपने पहलौठे
पुत्र, पहलौठे गाय के बच्चे, भेड़ों और बकरियों के पहले
छौनो को लेकर परमेश्वर के मन्दिर में आया करेंगे।
उन याजकों के पास हम इन सब को ले जाया करेंगे जो
वहाँ मन्दिर में सेवा आराधना करते हैं।

37"हम परमेश्वर के मन्दिर के भण्डार में याजकों
के पास ये वस्तुएँ भी लाया करेंगे: पहला पिसा खाना,
पहली अन्न–बलियाँ, हमारे सभी पेड़ों के पहले फल,
हमारी नयी दाखमधु और तेल का पहला भाग। हम
लेवीवंशियों के लिये अपनी उपज का दसवाँ हिस्सा भी
दिया करेंगे क्योंकि प्रत्येक नगर में जहाँ हम काम
करते हैं, लेवी वंशी हमसे ये वस्तुएँ लिया करते हैं।

38"लेवीवंशी जब उपज का यह भाग एकत्र करें तो
हारुन के परिवार का एक याजक उनके साथ अवश्य
होना चाहिये, और फिर इन सब वस्तुओं के दसवें
हिस्से को वहाँ से लेकर लेवीवंशियों को चाहिये कि
वे उन्हें हमारे परमेश्वर के मन्दिर में ले आयें और
उन्हें मन्दिर के खजाने की कोठियारों में रख दें।
39इस्राएल के लोगों और लेवीवंशियों को चाहिये कि वे
अपने उपहारों को कोठियारों में ले आयें। उपहार के
अन्न, नयी दाखमधु और तेल को उन्हें वहाँ ले आना
चाहिये। मन्दिर में काम आने वाली सभी वस्तुएँ उन
कोठियारों में रखी जाती हैं और अपने कार्य पर
नियुक्त याजक, गायक और द्वारपालों के कमरे भी
वही थे।

"हम सभी प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अपने परमेश्वर
के मन्दिर की देख–रेख किया करेंगे!"

यरूशलेम में नये लोगों का प्रवेश

11 देखो अब इस्राएल के लोगों के मुखिया यरूशलेम
में बस गए। इस्राएल के दूसरे लोगों को यह
निश्चित करना था कि नगर में और कौन लोग बसेंगे।
इसलिए उन्होंने पासे फेंके जिसके अनुसार हर दस
व्यक्तियों में से एक को यरूशलेम के पवित्र नगर में
रहना था और दूसरे नौ व्यक्तियों को अपने–अपने मूल
नगरों में बसना था। 2यरूशलेम में रहने के लिए कुछ
लोगों ने स्वयं अपने आप को प्रस्तुत किया। अपने आप
को स्वयं प्रस्तुत करने के लिए दूसरे व्यक्तियों ने उन्हें
धन्यवाद देते हुए आशीर्वाद दिये।

3ये प्रांतों के वे मुखिया हैं जो यरूशलेम में बस गये।
(कुछ इस्राएल के निवासी कुछ याजक लेवीवंशी मन्दिर
के सेवक और सुलैमान के उन सेवकों के वंशज
अलग–अलग नगरों में अपनी निजी धरती पर यहूदा में
रहा करते थे, 4तथा यहूदा और बिन्यामीन परिवारों के
दूसरे लोग यरूशलेम में ही रह रहे थे।)

यहूदा के वे वंशज जो यरूशलेम में बस गये थे, वे ये
हैं: उज्जियाह का पुत्र अतायाह (उज्जियाह जकर्याह का
पुत्र था, जकर्याह अमर्याह का पुत्र था, और अमर्याह,
शपत्याह का पुत्र था। शपत्याह महललेल का पुत्र था

और महललेल पेरेस का वंशज था)। 5मासेयाह बारुक
का पुत्र था (और बारुक कोल–होजे का पुत्र था। कोल
होजे हजायाह का पुत्र था। हजायाह योयारीब के पुत्र
अदायाह का पुत्र था। योयारीब का पिता जकर्याह था जो
शिलोई का वंशज था)। 6पेरेस के जो वंशज यरूशलेम
में रह रहे थे, उनकी संख्या थी चार सौ अड़सठ। वे
सभी लोग शूरवीर थे।

7बिन्यामीन के जो वंशज यरूशलेम में आयें वे ये थे:
सल्लू जो योएद के पुत्र मशूल्लाम का पूत्र था (मशूल्लाम
योएद का पुत्र था। योएद पदायाह का पुत्र था और
पदायाह कोलायाह का पुत्र था। कोलायाह इतीएह के
पुत्र मासेयाह का पुत्र था और इतीएह का पिता यशायाह
था)। 8जिन लोगों ने यशायाह का अनुसरण किया वे थे
गब्बै और सल्लै। इनके साथ नौ सौ अटठाईस पुरुष थे।
9जिक्री का पुत्र योएल इनका प्रधान था और हस्सनूआ
का पुत्र यहूदा यरूशलेम नगर का उपप्रधान था।

10यरूशलेम में जो याजक बस गए, वे हैं: योयारीब
का पुत्र यदायाह और याकीन, 11तथा सरायाह जो
हिलकियाह का पुत्र था। (हिल्किय्याह सादोक के पुत्र
मशुल्लाम का पुत्र था और सादोक अहीतूब के पुत्र
मरायोत का पुत्र। अहीतूब परमेश्वर के भवन की
देखभाल करने वाला था)। 12उनके भाइयों के आठ सौ
बाइस पुरुष, जो भवन के लिये काम किया करते थे।
तथा यरोहाम का पुत्र अदायाह। (यरोहाम, जो अस्सी के
पुत्र पलल्याह का पुत्र था। अस्सी के पिता का नाम
जकर्याह और दादा का नाम पशहूर था। पशहूर जो
मल्किय्याह का पुत्र था) 13अदायाह और उसके साथियों
की संख्या दो सौ बयालीस थी। ये लोग अपने–अपने
परिवारों के मुखिया थे। अमशै जो अज़रेल का पुत्र था।
(अज़रेल अहजै का पुत्र था। अहजै का पिता मशिल्लेमोत
था। जो इम्मेर का पुत्र था), 14अमशै और उसके साथी
वीर योद्धा थे। वे संख्या में एक सौ चौबीस थे। हग्गदोलीन
का पुत्र जब्दिएल उनका अधिकारी हुआ करता था।

15ये वे लेवीवंशी हैं, जो यरूशलेम में जा बसे थे:
शमायाह जो हश्शूब का पुत्र था (हश्शूब अज्रीकाम का
पुत्र और हुशब्याह का पोता था। हुशब्याह बुन्नी का पुत्र
था)। 16शब्बत और योजाबाद (ये दो व्यक्ति लेवीवंशियों
के मुखिया थे। परमेश्वर के भवन के बाहरी कामों के
ये अधिकारी थे)। 17मत्तन्याह, (मत्तन्याह मीका का पुत्र
था और मीका जब्दी का, तथा जब्दी आसाप का।
आसाप गायक मण्डली का निर्देशक था। आसाप स्तुति
गीत और प्रार्थनाओं के गायन में लोगों की अगुवाई
किया करता था बकबुकियाह (बकबुकियाह अपने
भाइयों के ऊपर दूसरे दर्जे का अधिकारी था)। और
शम्मू का पुत्र अब्दा (शम्मू यदूतून का पोता और गालाल
का पुत्र था)। 18इस प्रकार दो सौ चौरासी लेवीवंशी
यरूशलेम के पवित्र नगर में जा बसे थे।

19जो द्वारपाल यरूशलेम चले गये थे, उनके नाम ये
थे: अक्कूब, तलमोन, और उनके साथी। ये लोग नगर–
द्वारों पर नजर रखते हुए उनकी रखवाली किया करते
थे। ये संख्या में एक सौ बहत्तर थे।

20इस्राएल के दूसरे लोग, अन्य याजक और लेवीवंशी
यहूदा के सभी नगरों में रहने लगे। हर कोई व्यक्ति उस
धरती पर रहा करता था जो उनके पूर्वजों की थी।
21मन्दिर में सेवा आराधना करने वाले लोग ओपेल की
पहाड़ी पर बस गये। सीहा और गिश्पा मन्दिर के उन
सेवकों के मुखिया थे।

22यरूशलेम में लेवीवंशियों के ऊपर उज्जी को
अधिकारी बनाया गया। उज्जी बानी का पुत्र था। (बानी,
मीका का पड़पोता, मत्तन्याह का पोता, और हशब्याह
का पुत्र था)। उज्जी आसाप का वंशज था। आसाप के
वंशज वे गायक थे जिन पर परमेश्वर के मन्दिर की
सेवा का भार था। 23ये गायक राजा की आज्ञाओं का
पालन किया करते थे। राजा की आज्ञाएँ इन गायकों
को बताती थीं कि उन्हें प्रतिदिन क्या करना है। 24वह
व्यक्ति जो राजा को लोगों से सम्बन्धित मामलों में
सलाह दिया करता था वह था पतहियाह (पतहियाह
जेरह के वंशज मशेजबेल का पुत्र था और जेरह यहूदा
का पुत्र था)।

25यहूदा के लोग इन कस्बों में बस गये: किर्यतर्बा
और उसके आस–पास के छोटे–छोटे गाँव, दिबोन और
उसके आसपास के छोटे–छोटे गाँव यकब्सेल और उसके
आसपास के छोटे–छोटे गाँव 26तथा येशू, मोलादा,
बेतपेलेत, 27हसर्यूआल बेरशेबा तथा उस के आसपास
के छोटे–छोटे गाँव 28और सिकलग, मकोना और उसके
आसपास के छोटे गाँव। 29एन्निम्मोन, सोरा, यर्मूत,
30जानोह और अदुल्लाम तथा उसके आसपास के छोटे
छोटे गाँव। लाकीश और उसके आसपास के खेतो,
अजेका और उसके आसपास के छोटे–छोटे गाँव। इस
प्रकार बरशेबा

से लेकर हिन्नौम की तराई तक के इलाके में यहूदा
के लोग रहने लगे।

31जिन स्थानों में बिन्यामीन के वंशज रहने लगे थे,
वे ये थे: गेबा मिकमश, अय्या, बेतेल, ओर उसके
आस–पास के छोटे –छोटे गाँव, 32अनातोत, नोब,
अनन्याह 33हासोर रामा, गित्तैम, 34हादीद, सबोईम,
नबल्लत, 35लोद, ओनो तथा कारीगरों की तराई।
36लेवीवंशियों के कुछ समुदाय जो यहूदा में रहा करते
थे बिन्यामीन की धरती पर बस गये थे।

याजक और लेवीवंशी

12 जो याजक और लेवीवंशी यहूदा की धरती पर
लौट कर वापस आये थे, वे ये थे। वे शालतीएल
के पुत्र जरुब्बाबेल तथा येशू के साथ लौटे थे, उनके

नामों की सूची यह है: सरायाह, यिर्मयाह, एज्रा, 2अमर्याह,
मल्लूक, हत्तूश, 3शकन्याह, रहूम, मरेमोत, 4इद्दो,
गिन्तोई, अबियाह, 5मिय्यामीन, माद्याह, बिल्गा, 6शमायाह,
योआरीब, यदायाह, 7सल्लू, आमोक, हिल्किय्याह और
यदायाह। ये लोग याजकों और उनके सम्बन्धियों के
मुखिया थे। येशू के दिनों में ये ही उनके मुखिया हुआ
करते थे।

8लेवीवंशी लोग ये थे: येशु बिन्नुई, कदमिएल, शेरेब्याह,
यहूदा और मत्तन्याह भी। मत्तन्याह के सम्बन्धियों समेत
ये लोग परमेश्वर के स्तुति गीतों के अधिकारी थे।
9बकबुकियाह और उन्नो, इन लेवीवंशियों के सम्बन्धी
थे। ये दोनों सेवा आराधना के अवसरों पर उनके
सामने खड़े रहा करते थे। 10येशू योयाकीम का पिता
था और योयाकीम एल्याशीब का पिता था और एल्याशीब
के योयादा नाम का पुत्र पैदा हुआ। 11फिर योयादा से
योनातान और योनातान से यहूदा पैदा हुआ।

12योयाकीम के दिनों में ये पुरुष याजकों के परिवारों
के मुखिया हुआ करते थे:

शरायाह के घराने का मुखिया मरायाह था
यिर्मयाह के घराने का मुखिया हनन्याह था।
13 मश्शूलाम एज्रा के घराने का मुखिया था
अर्मयाह के घराने का मुखिया था यहोहानान।
14 योनातान मल्लूक के घराने का मुखिया था
योसेप शबन्याह के घराने का मुखिया था।
15 अदना हारीम के घराने का मुखिया था।
हेलैक मेरेमोत के घराने का मुखिया था।
16 जकर्याह इद्दो के घराने का मुखिया था।
मशुल्लाम गिन्नतोन के घराने का मुखिया था।
17 जिक्री अबियाह के घराने का मुखिया था।
पिलतै मिन्यामीन और मोअद्याह के घराने का
मुखिया था।
18 शम्मू बिल्गा के घराने का शम्मू
बिल्गा के घराने का मुखिया था।
यहोनातान शामायह के घराने का मुखिया था।
19 मतैन योयारीब के घराने का मुखिया था।
उजी, यदायाह के घराने का मुखिया था।
20 कल्लै सल्लै के घराने का मुखिया था।
एबेर आमोक के घराने का मुखिया था।
21 हशब्याह हिल्किय्याह के घराने का मुखियाथा
और नतनेल यदायाह के घराने का मुखिया
था।

22फारस के राजा दारा के शासन काल में लेवी
परिवारों के मुखियाओं और याजक घरानों के
मुखियाओं के नाम एल्याशीब, योयादा, योहानान तथा
यहूदा के दिनों में लिखे गये। 23लेवी परिवार के वंशजों
के बीच जो परिवार के मुखिया थे, उनके नाम
एल्याशीब के पुत्र योहानाम तक इतिहास की पुस्तक
में लिखे गये।

24लेवियों के मुखियाओं के नाम ये थे: हशब्याह,
शेरेब्याह, कदमिएल का पुत्र येशू उसके साथी। उनके
भाई परमेश्वर को आदर देने के लिए स्तुतिगान के
वास्ते उनके सामने खड़ा रहा करते थे। वे आमने–सामने
इस तरह खड़े होते थे कि एक गायक समूह दूसरे
गायक समूह के उत्तर में गीत गाता था। परमेश्वर के
भक्त दाऊद की ऐसी ही आज्ञा थी।

25जो द्वारपाल द्वारों के पास के कोठियारों पर पहरा
देते थे, वे ये थे: मत्तन्याह, बकबुकियाह, ओबाद्याह,
मशुल्लाम, तलमोन और अक्कूब। 26ये द्वारपाल
योयाकीम के दिनों में सेवा कार्य किया करते थे। योयाकीम
योसादाक के पुत्र येशू का पुत्र था। इन द्वारपालों ने ही
राज्यपाल नहेमायाह और याजक और विद्वान एज्रा के
दिनों में सेवा कार्य किया था।

यरूशलेम के परकोटे का समर्पित किया जाना

27लोगों ने यरूशलेम की दीवार का समर्पण किया।
उन्होंने सभी लेवियों को यरूशलेम में बुलाया। सो लेवी
जिस किसी नगर में भी रह रहे थे, वहाँ से वे आये।
यरूशलेम की दीवार के समर्पण को मनाने के लिए वे
यरूशलेम आये। परमेश्वर को धन्यवाद देने और
स्तुतिगीत गाने के लिए लेवीवंशी वहाँ आये। उन्होंने
अपनी झाँझ, सारंगी और वीणाएँ बजाई।

28-29इसके अतिरिक्त जितने भी और गायक थे, वे
भी यरूशलेम आये। वे गायक यरूशलेम के आसपास
के नगरों से आये थे। वे नतोपातियों के गावों से, बेत–
गिलगाल से, गेबा से और अजमाबेत के नगरों से आये
थे। गायको, ने यरूशलेम के इर्द–गिर्द अपने लिए
छोटी–छोटी बस्तियाँ बना रखी थीं।

30इस प्रकार याजकों और लेवियों ने एक समारोह
के द्वारा अपने अपने को शुद्ध किया। फिर एक समारोह
के द्वारा उन्होंने लोगों, द्वारों और यरूशलेम के परकोटे
को भी शुद्ध किया।

31फिर मैंने यहूदा के मुखियाओं से कहा कि वे ऊपर
जा कर परकोटे के शिखर पर खड़े हो जायें। मैंने
परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिये दो बड़ी
गायक–मण्डलियों का चुनाव भी किया। इनमें से एक
गायक मण्डली को कुरडी–द्वार की ओर दाहिनी तरफ
परकोटे के शिखर पर जाना आरम्भ था। 32होशायाह,
और यहूदा के आधे मुखिया उन गायकों के पीछे हो
लिये। 33अजर्याह, एज्रा, मशुल्लाम, 34यहूदा, बिन्यामीन,
शमायाह, और यिर्मयाह भी उनके पीछे हो लिये थे।
35तुरही लिये कुछ याजक भी दीवार पर उनका अनुसरण
करते हुए गये। जकर्याह भी उनके पीछे–पीछे था।
(जकर्याह योहानान का पुत्र था। योहानान शमायाह का

पुत्र था। शमायाह मत्तन्याह का पुत्र था। मत्तन्याह मीकायाह का पुत्र था। मीकायाह जक्कूर का पुत्र था और जक्कूर आसाप का पुत्र था।) 36वहाँ जकरिया के भाई शमायाह, अज़रेल, मिल्लै, गिल्लै, माऐ, नतनेल, यहूदा, और हनानी भी मौजूद थे। उनके पास परमेश्वर के पुरुष, दाऊद के बनाये हुए बाजे थे। परकोटे की दीवार को समर्पित करने के लिए जो लोग वहाँ थे, उनके समूह की अगुवाई, विद्वान एज्रा ने की। 37और वे स्रोत–द्वार पर चले गये। फिर वे सामने की सीढ़ियों से होते हुए दाऊद के नगर पैदल ही गये। फिर वे नगर परकोटे के शिखर पर जा पहुँचे और इस तरह दाऊद के घर पर से होते हुए वे पूर्वी जल द्वार पर पहुँच गए।

38गायकों की दूसरी मण्डली बांई ओर दूसरी दिशा में चल पड़ी। वे जब परकोटे के शिखर की ओर जा रहे थे, मैं उनके पीछे हो लिया। आधे लोग भी उनके पीछे हो लिये। भट्ठों के मीनारों को पीछे छोड़ते हुए वे चौड़े परकोटे पर चले गये। 39इसके बाद वे इन द्वारों पर गये–एप्रैम द्वार, पुराना दरवाजा और मछली फाटक और फिर वे हननेल और हम्मेआ के बुर्जो पर गये। वे भेड़ द्वार तक जा पहुँचे और पहरेदारों के द्वार पर जा कर रुक गये। 40फिर गायकों की वे दोनों मण्डलियाँ परमेश्वर के मन्दिर में अपने–अपने स्थानों को चली गयीं और मैं अपने स्थान पर खड़ा हो गया तथा आधे हाकिम मन्दिर में अपने–अपने स्थानों पर जा खड़े हुए। 41फिर इसके बाद अपने–अपने स्थानों पर जो याजक जा खड़े हुए थे, उनके नाम हैं–एल्याकिम, मासेमाह, मिन्यामीन, मीकायाह, एल्योएनै, जकर्याह और हनन्याह। उन याजकों ने अपनी–अपनी तुरहियाँ भी ले रखी थीं। 42इसके बाद ये याजक भी मन्दिर में अपने–अपने स्थानों पर आ खड़े हुए: मासेयाह, शमायाह, एलियाजर, उज्जी, यहोहानाम, मल्कियाह, एलाम और एजेर।

फिर दोनो, गायक मण्डलियों ने यिज्रहियाह की अगुवाई में गाना आरम्भ किया। 43सो उस विशेष दिन, याजकों ने बहुत सी बलियाँ चढ़ाई। हर कोई बहुत प्रसन्न था। परमेश्वर ने हर किसी को आनन्दित किया था। यहाँ तक कि स्त्रियाँ और बच्चे तक बहुत उल्लसित और प्रसन्न थे। दूर दराज के लोग भी यरूशलेम से आते हुए आनन्दपूर्ण शोर को सुन सकते थे।

44उस दिन मुखियाओं ने कोठियारों के अधिकारियों की नियुक्ति की। ये कोठियार उन उपहार को रखने के लिए थे जिन्हें लोग अपने पहले फलों और अपनी फसल और आय के दसवें हिस्से के रुप में लाया करते थे। व्यवस्था के विधान के अनुसार लोगों को नगर के चारों ओर के खेतों और बगीचों से उपज का एक हिस्सा, याजकों और लेवियों के लिये लाना चाहिये। यहूदा के लोग जो याजक और लेवी सेवा कार्य करते थे उनके लिए ऐसा करने में प्रसन्नता का अनुभव करते थे। 45याजकों और लेवियों ने अपने परमेश्वर के लिये अपना कर्तव्य पालन किया था। उन्होंने वे समारोह किये थे जिनसे लोग पवित्र हुए। गायकों और द्वारपालों ने भी अपने हिस्से का काम किया। दाऊद और उस के पुत्र सुलैमान ने जो भी आज्ञाएँ दी थीं, उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया था। 46(बहुत दिनों पहले दाऊद और आसाप के दिनों में वह धन्यवाद के गीतों और परमेश्वर की स्तुतियों तथा गायकों के मुखिया हुआ करते थे।)

47सो जरुब्बबेल और नहेमायाह के दिनों में गायकों और द्वारपालों के रखरखाव के लिये इस्राएल के सभी लोग प्रतिदिन दान दिया करते थे। दूसरे लेवियों के लिए भी वे विशेष दान दिया करते थे और फिर लेवी उस में से हारुन के वंशजों याजकों के लिये विशेष योगदान दिया करते थे।

नहेमायाह के अंतिम आदेश

13 उस दिन मूसा की पुस्तक का ऊँचे स्वर में पाठ किया गया ताकि सभी लोग उसे सुन लें। मूसा की पुस्तक में उन्हें यह नियम लिखा हुआ मिला: किसी भी अम्मोनी व्यक्ति को और किसी भी मोआबी व्यक्ति को परमेश्वर की सभाओं में सम्मिलित न होने दिया जाये। 2यह नियम इस लिये लिखा गया था कि वे इस्राएल के लोगों को भोजन या जल नहीं दिया करते थे, तथा वे इस्राएल के लोगों को शाप देने के लिए बालाम को धन दिया[17] करते थे। किन्तु हमारे परमेश्वर ने उस शाप को हमारे लिए वरदान में बदल दिया 3सो इस्राएल के लोगों ने इस नियम को सुन कर इसका पालन किया और पराये लोगों के वंशजों को इस्राएल से अलग कर दिया।

4-5किन्तु ऐसा होने से पहले एल्याशीब ने तोबियाह को मंदिर में एक बड़ी सी कोठरी दे दी। एल्याशीब परमेश्वर के मन्दिर के भण्डार घरों का अधिकारी याजक था, तथा एल्याशीब तोबियाह का घनिष्ठ मित्र भी था। पहले उस कोठरी का प्रयोग भेंट में चढ़ाये गये अन्न, सुगन्ध और मन्दिर के बर्तनों तथा अन्य वस्तुओं के रखने के लिये किया जाता था। उस कोठरी में लेवियों, गायकों और द्वारपालों के लिये अन्न के दसवें भाग, नयी दाखमधु और तेल भी रखा करते थे। याजकों को दिये गये उपहार भी उस कोठरी में रखे जाते थे। किन्तु एल्याशीब ने उस कोठरी को तोबियाह को दे दिया था।

6जिस समय यह सब कुछ हुआ था, उस समय मैं यरूशलेम में नहीं था। मैं बाबेल के राजा के पास वापस गया हुआ था। जब बाबेल के राजा अर्तक्षत्र के शासन का बत्तीसवाँ साल था, तब मैं बाबेल गया था। बाद में मैंने राजा से यरूशलेम वापस लौट जाने की अनुमति माँगी 7और इस तरह मैं वापस यरूशलेम लौट आया।

यरूशलेम में एल्याशीब के इस दुखद करतब के बारे में
मैंने सुना कि एल्याशीब ने हमारे परमेश्वर के मन्दिर
के दालान की एक कोठरी तोबियाह को दे दी है।
8एल्याशीब ने जो किया था, उससे मैं बहुत क्रोधित था।
सो मैंने तोबियाह की वस्तुएँ उस कोठरी से बाहर निकाल
फेंकी। 9उन कोठरियों को स्वच्छ और पवित्र बनाने के
लिये मैंने आदेश दिये और फिर उन कोठरियों में मैंने
मंदिर के पात्र तथा अन्य वस्तुएँ भेंट में चढ़ाया हुआ
अन्न और सुगन्धित द्रव्य फिर से वापस रखवा दिये।

10मैंने यह भी सुना कि लोगों ने लेवियों को उनका
हिस्सा नहीं दिया है जिससे लेवीवंशी और गायक अपने
खेतों में काम करने के लिये वापस चले गये हैं। 11सो
मैंने उन अधिकारियों से कहा कि वे गलत है। मैंने उन
से पूछा, "तुमने परमेश्वर के मन्दिर की देखभाल क्यों
नहीं की?" मैंने सभी लेवी वंशियों को इकट्ठा किया
और मन्दिर में उनके स्थानों और उनके कामों पर
वापस लौट आने को कहा। 12इसके बाद यहूदा का हर
कोई व्यक्ति उनके दसवें हिस्से का अन्न, नयी दाखमधु
और तेल मन्दिर में लाने लगा। उन वस्तुओं को भण्डार
गृहों में रख दिया जाता था।

13मैंने इन पुरुषों को भण्डार गृहों का कोठियारी
नियुक्त किया: याजक, शेलेम्याह, विद्वान सादोक तथा
पादायाह नाम का एक लेवी। साथ ही मैंने पत्तन्याह के
पोते और जक्कूर के पुत्र हानान को उनका सहायक
नियुक्त कर दिया। मैं जानता था कि उन व्यक्तियों का
विश्वास किया जा सकता था। अपने से सम्बन्धित लोगों
को सामान देना, उनका काम था।

14हे परमेश्वर, मेरे किये कामों के लिये तू मुझे याद
रख और अपने परमेश्वर के मन्दिर तथा उसके सेवा
कार्यो के लिये विश्वास के साथ मैंने जो कुछ किया है,
उस सब कुछ को तू मत भुलाना।

15उन्हीं दिनों यहूदा में मैंने देखा कि लोग सब्त के
दिन भी काम करते हैं। मैंने देखा कि लोग दाखमधु
बनाने के लिए अँगूरों का रस निकाल रहे है। मैंने लोगों
को अनाज लाते और उसे गधों पर लादते देखा। मैंने
लोगों को नगर में अँगूर, अंजीर तथा हर तरह की
वस्तुएँ ले कर आते हुए देखा। वे इन सब वस्तुओं को
सब्त के दिन यरूशलेम में ला रहे थे। सो इसके लिए
मैंने उन्हें चेतावनी दी। मैंने उनसे कह दिया कि उन्हें
सब्त के दिन खाने की वस्तुएँ कदापि नहीं बेचनी
चाहिए।

16यरूशलेम में कुछ सीरी नगर के लोग भी रहा
करते थे। वे लोग मछली और दूसरी तरह की अन्य
वस्तुएँ यरूशलेम में लाया करते और उन्हें सब्त के दिन
बेचा करते और यहूदी उन वस्तुओं के खरीदा करते
थे। 17मैंने यहूदा के महत्त्वपूर्ण लोगों से कहा, कि वे
ठीक नहीं कर रहे हैं। उन महत्त्वपूर्ण लोगों से मैंने
कहा, "तुम यह बहुत बुरा काम कर रहे हो। तुम सब्त
के दिन को भ्रष्ट कर रहे हो। तुम सब्त के दिन को
एक आम दिन जैसा बनाये डाल रहे हो। 18तुम्हें यह
ज्ञान है कि तुम्हारे पूर्वजों ने ऐसे ही काम किये थे।
इसीलिए हमारे परमेश्वर ने हम पर और हमारे नगर
पर विपत्तियाँ भेजी थीं और विनाश ढाया था। अब तुम
लोग तो वैसे काम और भी अधिक कर रहे हो, जिससे
इस्राएल पर वैसी ही बुरी बातें और अधिक घटेंगी क्योंकि
तुम सब्त के दिन को बर्बाद कर रहे हो और इसे ऐसा
बनाये डाल रहे हो जैसे यह कोई महत्त्वपूर्ण दिन ही नहीं
है।"

19सो हर शुक्रवार की शाम को साँझ होने से पहले
ही मैंने यह किया कि द्वारपालों को आज्ञा देकर यरूशलेम
के द्वार बंद करवा कर उन पर ताले डलवा दिये। मैंने
यह आज्ञा भी दे दी कि जब तक सब्त का दिन पूरा न
हो जाये द्वार न खोले जायें। कुछ अपने ही लोग मैंने द्वारों
पर नियुक्त कर दिये। उन लोगों को यह आदेश दे दिया
गया था कि सब्त के दिन यरूशलेम में कोई भी माल
असबाव न आने पाये इसे वे सुनिश्चित कर लें।

20एक आध बार तो व्यापारियों और सौदागरों को
यरूशलेम से बाहर ही रात गुजारनी पड़ी। 21किन्तु मैंने
उन व्यापारियों और सौदागरों को चेतावनी दे दी। मैंने
उनसे कहा, "परकोटे की दीवार के आगे न ठहरा
करो और यदि तुम फिर ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें बन्दी
बना लूँगा।" सो उस दिन के बाद से सब्त के दिन अपना
सामान बेचने के लिए वे फिर कभी नहीं आये।

22फिर मैंने लेवीवंशियों को आदेश दिया कि वे स्वयं
को पवित्र करें। ऐसा कर चुकने के बाद ही उन्हें द्वारों
के पहरे पर जाना था। यह इसलिये किया गया कि सब्त
के दिन को एक पवित्र दिन के रुप में रखा गया है, इसे
सुनिश्चित कर लिया जाये।

हे परमेश्वर! इन कामों को करने के लिए तू मुझे
याद रख। मेरे प्रति दयालु हो और मुझ पर अपना महान
प्रेम प्रकट कर!

23उन्हीं दिनों मैंने यह भी देखा कि कुछ यहूदी पुरुषों
ने आशदोद, अम्मोन और मोआब प्रदेशों की स्त्रियों से
विवाह किया हुआ है, 24और उन विवाहों से उत्पन्न हुए
आधे बच्चे तो यहूदी भाषा को बोलना तक नहीं जानते
हैं। वे बच्चे अश्दौद, अम्मोन और मोआब की बोली
बोलते थे। 25सो मैंने उन लोगों से कहा कि वे गलती पर
हैं। उन पर परमेश्वर का कहर बरसा हो। कुछ लोगों
पर तो मैं चोट ही कर बैठा और मैंने उनके बाल
उखाड़ लिये। परमेश्वर के नाम पर एक प्रतिज्ञा करने
के लिए मैंने उन पर दबाव डाला। मैंने उनसे कहा,
"उन पराये लोगों के पुत्रों के साथ तुम्हें अपनी पुत्रियों
को ब्याह नहीं करना है और उन पराये लोगों की
पुत्रियों को भी तुम्हें अपने पुत्रों से ब्याह नहीं करने देना

है। उन लोगों की पुत्रियों के साथ तुम्हें ब्याह नहीं
करना है। 26तुम जानते हो कि सुलैमान से इसी प्रकार
के विवाहों ने पाप करवाया था। तुम जानते हो कि
किसी भी राष्ट्र में सुलैमान जैसा महान कोई राजा नहीं
हुआ। सुलैमान को परमेश्वर प्रेम करता था और
परमेश्वर ने ही सुलैमान को समूचे इस्राएल का राजा
बनाया था। किन्तु इतना होने पर भी विजातीय पत्नियों
के कारण सुलैमान तक को पाप करने पड़े 27और अब
क्या, हम तुम्हारी सुनें और वैसा ही भयानक पाप करें
और विजाति औरतों के साथ विवाह करके अपने
परमेश्वर के प्रति सच्चे नहीं रहे।"

28योयादा का एक पुत्र होरोन के सम्बल्लत का दामाद
था। योयादा महायाजक एल्याशीब का पुत्र था। सो मैंने
योयादा के उस पुत्र पर दबाव डाला कि वह मेरे पास से
भाग जाये। 29हे मेरे परमेश्वर! उन्हें याद रख क्योंकि
उन्होंने याजकपन को भ्रष्ट किया था। उन्होंने याजकपन
को ऐसा बना दिया था जैसे उसका कोई महत्व ही न
हो। तूने याजकों और लेवियों के साथ जो वाचा की थी,
उन्होंने उसका पालन नहीं किया। 30सो मैंने हर किसी
बाहरी वस्तु से याजकों और लेवियों को पवित्र एवं
स्वच्छ बना दिया है तथा मैंने प्रत्येक पुरुष को उसके
अपने कर्तव्य और दायित्व भी सौंपे हैं। 31मैंने लकड़ी
के उपहारों और एक निश्चित समय पर पहले फलों
को लाने सम्बन्धी योजनाएँ भी बना दी हैं।

हे मेरे परमेश्वर! इन अच्छे कामों के लिये तू मुझे
याद रख।